स्वर्ण जयन्ती प्रकाशन 2013

BIHAR YOGA

श्री हनुमान चालीसा

संकलन एवं सम्पादन

अवलोकितेश्वर



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

श्री हनुमान चालीसा



WORLD YOGA CONVENTION 2013
GANGA DARSHAN, MUNGER, BIHAR, INDIA
23rd–27th October 2013

श्री हनुमान चालीसा

बिहार योग विद्यालय, मुंगेर की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर गोस्वामी तुलसीदास रचित श्री हनुमान चालीसा पर चिन्मय मिशन के प्रमुख स्वामी तेजोमयानन्दजी के प्रवचनों की 16 शीर्षकों के माध्यम से प्रस्तुति

संकलन एवं सम्पादन

अवलोकितेश्वर

(सुबोध अग्रवाल, सतना)

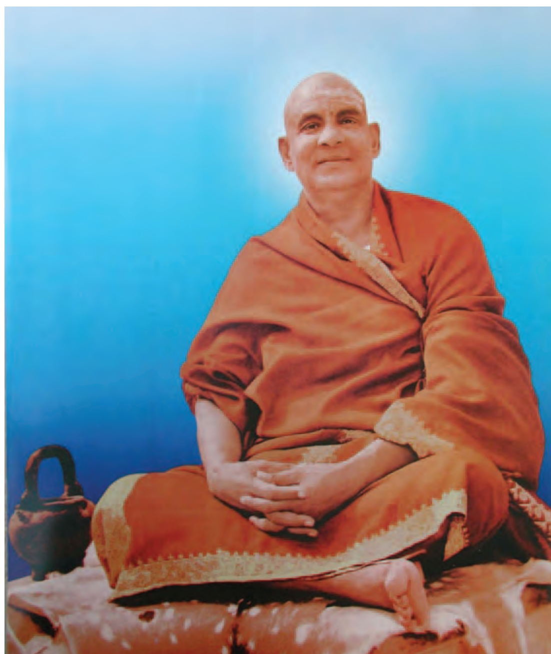


योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट द्वारा प्रथम प्रकाशन 2013

प्रकाशक एवं वितरक—योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट,
मुंगेर, बिहार, भारत
मुद्रक—एजीएन ऑफसेट प्रिंटर्स,
ग्रेटर नोएडा

वेबसाइट: www.biharyoga.net
www.rikhiapeeth.net



सविनय समर्पण

स्वामी शिवानन्द सरस्वती के चरणों में
जिन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को योग के रहस्यों की शिक्षा दी



नमो नारायण

योगविद्या भारतवर्ष की सबसे प्राचीन संस्कृति और जीवन-पद्धति है तथा इसी विद्या के बल पर भारतवासी प्राचीनकाल में सुखी, समृद्ध और स्वस्थ जीवन बिताते थे। जब से भारत में योग विद्या का ह्रास हुआ, तभी से भारतवासी गरीब, दु:खी और अस्वस्थ हैं। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म से शान्ति मिलती है और योगाभ्यास से धन-धान्य, समृद्धि और स्वास्थ्य। भारत में सुख, समृद्धि, शक्ति और स्वास्थ्य के लिए हर व्यक्ति को योगाभ्यास करना चाहिए।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
रिखियापीठ, 2005

विषय सूची

पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी सत्यानन्द जी के रिखिया सत्संग से	1
श्री हनुमान चालीसा पाठ	3
श्री हनुमान चालीसा की महिमा	5
16 शीर्षकों द्वारा संक्षिप्त व्याख्या	8
16 शीर्षकों द्वारा विस्तृत व्याख्या	17

पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी सत्यानन्द जी के रिखिया सत्संग से

हनुमानजी का जन्म स्थान

हनुमानजी का जन्म जहाँ हुआ था वह स्थान महाराष्ट्र में नासिक के पास त्र्यम्बकेश्वर के अत्यंत निकट है। जन्म से ही वे इतने बलशाली थे कि एक हाथी को गेंद की भांति उठा लेते थे।

हनुमानजी एक योगी

हनु का मतलब होता है चिन। हनुमान मायने चिन वाला और यह जो चिन या ठुड्ढी होती है इसका तात्पर्य होता है जालंधर बंध से। हनुमान जी ने जितने भी कर्म किये हैं वे सब योग की क्रियायें हैं। उड़ना है, समुद्र लांघना है और लंका को जला देना है, ये तो सब योग के हाथ की बात है। कोई पहलवान के बस की बात नहीं है। हनुमान एक योगी थे इसलिए उनका नाम हनुमान था। उनको सारी सिद्धियाँ थीं। शरीर को छोटा कर लेना, बड़ा कर लेना, अदृश्य हो जाना।

हनुमानजी शिवजी का रूप

हनुमानजी को शिवजी का ही रूप कहा जाता है। शिवजी का तो रामजी के साथ बहुत स्नेह है। शिवजी हमेशा रामजी के पास आते-जाते रहते हैं। रामजी भी शिवजी के यहाँ आते-जाते रहते हैं। जब पार्वतीजी के साथ विवाह का संबंध हुआ तो रामजी ने ही आकर उनको बोला, शादी कीजिए। जब रामजी का जन्म हुआ, विवाह हुआ, तो शिवजी आए ही हैं। तो दोनों का संबंध है।



राम का अवतार हुआ तो शिव का भी अवतार हुआ। विष्णु ने राम के रूप में अवतार लिया और शिवजी ने हनुमानजी के रूप में अवतार लिया।

हनुमानजी के गुणों के कारण ही राम ने उन्हें अपना सेवक बनाया

हनुमानजी विद्वान थे, गुणी थे, कार्यकुशल थे और प्रशिक्षित थे। उन्होंने अनेक कलाओं में निपुणता प्राप्त की थी। उनमें अनेक कौशल थे। वे बहुत चतुर थे। बोलने के पहले उनकी समझ में आ जाता था। वे उड़ सकते थे, तैर सकते थे, अपने शरीर के आकार को घटा बढ़ाकर अति सूक्ष्म या अति विशाल बना सकते थे। इन्हीं गुणों के कारण श्रीरामजी ने उन्हें अपना सेवक बनाया था। श्रीरामजी स्वयं अत्यंत बुद्धिमान थे। रामचरितमानस में उन्हें चतुर शिरोमणि कहा गया है। श्रीराम बुद्धिमानों के राजा थे, बुद्धिमानों के मुकुटमणि थे। ऐसी स्थिति में उनके सहायक का बुद्धिमान होना आवश्यक ही है। नहीं तो फिर उनकी आपस में पटेगी नहीं।

हनुमानजी के हृदय में श्रीराम नित्यवास करते हैं। हनुमान भक्ति से ओतप्रोत हैं। श्रीरामजी के लिए उनके हृदय में अति उत्कट दास्य भक्ति है। उनका श्रीरामजी के साथ स्वामी सेवक का संबंध है।

श्री-हनुमान-चालीसा पाठ

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन ॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लषन सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

श्री हनुमान चालीसा की महिमा

हनुमान चालीसा गोस्वामी तुलसीदास जी की लोकप्रिय रचना

गोस्वामी तुलसीदास जी का प्रसिद्ध ग्रंथ है 'श्री रामचरितमानस'। इसके अलावा उनकी जो अत्यंत लोकप्रिय रचना हुई वह है 'श्री हनुमान चालीसा'। वैसे उनके और भी दूसरे ग्रंथ हैं जैसे कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका। लेकिन जो अत्यंत लोकप्रिय है लोगों में, वह है हनुमान चालीसा। इसमें चालीस चौपाइयों में श्री हनुमान जी का यश गाया गया है।

संकट को दूर करने व रामभक्ति प्राप्ति में अत्यंत सहायक

इस हनुमान चालीसा की प्रसिद्धि ऐसी है कि जो कोई व्यक्ति संकटकाल में इसको पढ़े उसका संकट दूर हो जाता है या फिर उसकी कोई अपनी इच्छा भी हो जो उसे पूरी करनी है तो वह भी इस हनुमान चालीसा के पाठ से सिद्ध हो सकती है। और यदि रामभक्ति पानी है तब तो फिर क्या कहना? सबसे अच्छा उपाय हनुमान चालीसा का पाठ है।

इस पर विचार करें – बहुमूल्य रत्न हाथ आयेंगे

श्री हनुमान चालीसा का सुंदर पाठ जो कि लोकप्रिय है, सरल भाषा में है और इसलिए इस पर लोग बहुत अधिक विचार नहीं करते हैं। लेकिन यदि इस पर विचार करेंगे तो बहुमूल्य रत्न हाथ में मिलेंगे।

हनुमान जी का संक्षिप्त परिचय

जब हनुमान जी का यश गाना है तो बिल्कुल संक्षेप में आपको बता दें कि हनुमान जी कौन हैं? किसी का जब परिचय दिया जाता है तो उसके नाम,

रूप, जाति, क्रिया, संबंध, कर्म पर ध्यान दिया जाता है। उसके स्वरूप पर भी विचार करते हैं। इनका नाम है हनुमान और रूप? विचित्र बात है। इनका रूप हुआ वानर का, इसलिए हम कहेंगे कि ये पशु जाति में हुए। तो पशु जाति है, वानर रूप है। लेकिन इनका स्वरूप क्या है? तो ये साक्षात् ब्रह्म हैं। ब्रह्म स्वरूप हैं। लेकिन जब यहाँ पर श्री रामचन्द्र जी की लीला हुई तो रामचन्द्र जी के साथ इनका संबंध हुआ सेवक का, दास का। तो राम जी के साथ संबंध हुआ सेवक का। राम जी तो परब्रह्म हैं ही। लेकिन परब्रह्म होकर दशरथ महाराज व कौशल्या जी के पुत्र रूप में अवतरित हुए हैं। इसी प्रकार हनुमान जी भी ब्रह्मस्वरूप ही हैं। लेकिन यहाँ पर आये कैसे? तो अंजनी नंदन बनकर आये। अंजनी व केसरी इनके माता-पिता हैं। ये शिव जी के अवतार हैं। इनके बहुत रूप हैं। इनका शुद्ध स्वरूप ब्रह्म है। ये वायु देवता के पुत्र कहे जाते हैं। इनकी विलक्षणिता है ये सब। राम जी के साथ संबंध हुआ सेवक का, दास का। इनके जीवन का एक ही कर्म था वह है भगवान की सेवा। इनका आदर्श क्या था? श्री रामभक्ति इनका आदर्श था। भक्ति में भी दास्य भक्ति के सर्वोत्कृष्ट आदर्श हैं।

हनुमान जी को वानर मात्र समझना हमारी बुद्धि की मन्दता है

तैत्तिरीय उपनिषद् में वर्णन आता है, "ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठा"। देखो ब्रह्म पुच्छं कहा गया। 'पुच्छ' मायने पूँछ। ये हमारे हनुमान जी वानर रूप में हैं, वानर की एक पूँछ होती है उस पूँछ के ऊपर वानर का बहुत प्रेम होता है। यह 'पुच्छ' क्या है? ब्रह्म है। यह पूँछ साधारण सी पूँछ नहीं है, यह तो ब्रह्म प्रतिष्ठा स्वरूप है। हनुमान जी स्वयं ब्रह्म-स्वरूप हैं, ब्रह्मज्ञानी हैं ये। इसलिये वानर रूप में होकर कोई इन्हें वानर समझ ले, तो ये हमारी बुद्धि की मंदता ही कही जा सकती है।

हनुमान जी का सर्वश्रेष्ठ गुण है 'निरहंकारिता'

नाम, रूप, स्वरूप, कर्म, संबंध के बाद आता है गुण। इनके गुण क्या हैं? तो गुणों के संबंध में कहा कि 'सकल गुण निधानं' ये सारे सद्‌गुणों के निधान हैं। और सारे सद्‌गुणों में सर्वश्रेष्ठ कोई गुण है वह है 'निरंहकारिता' और सत्‌शीलता। उनका ऐसा सुंदर चरित्र है कि उसमें अहंकार का कहीं नाम ही नहीं है। ऐसी नम्रता, दीनता इनमें दिखाई देती है। हम जानते हैं कि किसी

व्यक्ति में बहुत गुण हों अच्छे-अच्छे, लेकिन यदि अहंकार होता है तो सारे ही गुण व्यर्थ हो जाते हैं। अब यह निरहंकारिता एक ऐसा गुण है जो सभी के लिये आदर्श रूप है। तो ऐसे हैं हनुमान जी।

हनुमान जी का यश गाने से इनके गुण हमारे अंदर आयेंगे

हनुमान जी का यश क्यों गायें? इनका यश गायेंगे, अपनी वाणी शुद्ध होगी, मन शुद्ध होगा, इनकी प्रीति प्राप्त हो जायेगी, इनके प्रसाद से राम भक्ति प्राप्त हो जायेगी। राम जी की प्राप्ति हो जायेगी। और जब यश गाया जाता है तो एक प्रकार की यह उपासना हुई, पूजा हुई। और पूजा व उपासना में जिनकी हम पूजा करते हैं, उनके गुण अपने में लाना यही उस उपासना या पूजा का फल होता है। हमारे उपास्य जो हैं वे श्रेष्ठ होने चाहिए। उपासना का मतलब पास में रहना, तो जिनकी उपासना करते हैं उनके पास में रहने से उनके गुण हमारे अंदर आ जायें तब तो उपासना सार्थक हुई।



श्री हनुमान चालीसा

16 शीर्षकों द्वारा संक्षिप्त व्याख्या

1. सद्गुरु के चरण रज से मन दर्पण की सफाई

(दोहा 1)

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि श्री सद्गुरु के चरण कमलों की धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को साफ करके रघुबर के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ। जो चारों प्रकार के फल प्रदान करने में समर्थ है।

2. हनुमान जी का आहवान एवं बल, बुद्धि, विद्या की याचना

(दोहा 2)

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल, बुधि, विद्या देहु मोंहि, हरहु कलेस विकार ॥

मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि मैं बुद्धिहीन शरीर हूँ। अब मैं पवन कुमार हनुमान जी का स्मरण करता हूँ। आप मुझे बल प्रदान कीजिये, बुद्धि दीजिये, विद्या दीजिये और हमारे मन के सारे क्लेशों को दूर कीजिये, मन में जो अनेकों विकार आते रहते हैं, उनको भी दूर कीजिये।

3. हनुमान जी का रूप, सौंदर्य, गुण, जन्म, स्वरूप

(चौपाई 1 से 8)

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥1॥
राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥2॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥3॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥4॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥5॥
संकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥6॥
विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥7॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥8॥



इन 8 चौपाइयों में हनुमान जी के बारे में वर्णन है। हनुमान जी ज्ञान, गुण के सागर हैं, आपका यश तीनों लोकों में प्रकाशित है, आप राम जी के सेवक हैं, अतुलित बलशाली हैं, महावीर, पराक्रमी, अंग-अंग वज्र के समान, अति चतुर हैं। आप कुमति को दूर कर सुमति प्रदान करने वाले हैं। हनुमान जी अंजनी-केसरी के पुत्र हैं, पवन यानी वायु पुत्र हैं, शंकर जी के अवतार हैं। आपका शरीर स्वर्ण के समान है एवं प्रकाशित है, मुंजा घास का जनेऊ पहने हैं, कानों में कुंडल हैं, घुंघराले बाल हैं। अत्यंत सुंदर रूप है। हाथ में वज्र के समान गदा है। आप राम जी का कार्य करने के लिए सदैव तैयार रहते हैं। और आपका सबसे बड़ा गुण है, राम चरित्र सुनने के रसिया हैं। जहाँ रामकथा होती है आप पहुँच जाते हैं। आपके हृदय में श्री राम, लक्ष्मण एवं सीता जी विराजमान हैं।

4. श्री राम जी के क्या कार्य किये

(चौपाई 9 से 11)

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥9॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचंद्र के काज सँवारे ॥10॥
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥11॥

इन तीनों चौपाइयों में हनुमान जी ने राम जी के क्या कार्य किये इसका वर्णन है। आपने छोटा सा रूप रखकर सीता जी को राम जी का संदेश सुनाया, विशाल रूप धरकर लंका जलाई, भयंकर रूप धारण कर राक्षसों का संहार किया। संजीवनी लाकर लक्ष्मण जी को जीवन प्रदान किया। आपको श्री राम जी ने प्रसन्न होकर गले लगाया।

5. हनुमान जी का यश कौन-कौन गाते हैं

(चौपाई 12 से 15)

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥12॥
सहस बदन तुम्हरों जस गावैं ।
अस कहिं श्रीपति कंठ लगावैं ॥13॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥14॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सकें कहाँ ते ॥15॥

इन चौपाइयों में हनुमान जी का यश कौन-कौन गाता है इसका वर्णन है। हनुमान जी का यश स्वयं भगवान राम गाते हैं, वे उनकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि तुम मुझे भरत के समान प्रिय हो। लक्ष्मण जी आपका यश गाते हैं। सनक, सनन्दन, सनातन, सनत कुमार ये चारों, ब्रह्मा जी, नारद, सरस्वती जी, दिक्पाल, मुनिगण, शेषनाग, यम, कुबेर इत्यादि सब आपका यश गाते हैं।

6. सुग्रीव, विभीषण को रामदर्शन करवाया

(चौपाई 16 से 17)

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥16॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥17॥

आपने सुग्रीव एवं विभीषण दोनों को श्रीराम जी से मिलवाकर भक्त बनवाया, उन्हें राज्य पद दिलवाया, उनको श्री राम दर्शन करवा दिये। इस प्रकार हनुमान जी भक्तों को प्रेरणा देकर, पकड़कर राम जी से मिलवाते हैं।

7. कठिन से कठिन कार्य सहजता से पूरे

(चौपाई 18 से 20)

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥18॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥19॥
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥20॥

इन तीन चौपाइयों में तुलसीदास जी हनुमान जी द्वारा किये गये दुष्कर, कठिन से कठिन कार्यों का वर्णन करते हैं। बचपन में ही सूर्य को निगलने का साहस किया। प्रभु श्रीराम की अंगुठी मुँह में रखकर अथाह समुद्र पार किया, सहजता से। आपकी कृपा से संसार के कठिन से कठिन कार्य सरल होकर पूर्ण होते हैं।

8. आपकी कृपा से राम दरबार में प्रवेश

(चौपाई 21)

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥21॥

इस चौपाई में बिल्कुल स्पष्ट रूप से कहा है कि हनुमान जी श्री राम दरबार के द्वारपाल हैं। इनकी भक्ति से, इनकी कृपा से अत्यंत कठिन राम दर्शन सरलता से हो जाते हैं। आपकी आज्ञा से ही राम दरबार में प्रवेश है। परंतु हनुमान जी सबको रोकने वाले द्वारपाल नहीं हैं, ये तो पकड़-पकड़कर राम दर्शन करवाने वाले हैं। बस थोड़ी सी कृपा चाहिये हनुमान जी की।

9. दैनिक जीवन में हनुमान जी सहायक



(चौपाई 22 से 26)

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डरना ॥22॥
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥23॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥24॥
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥25॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥26॥

इन पाँच चौपाइयों में यह बताया है कि हमारे दैनिक जीवन में हनुमान जी कैसे सहायता करते हैं। हनुमान जी सब तरह के सुख प्रदान करते हैं, डर को दूर भगाते हैं। आपके स्मरण मात्र से भूत, प्रेत दूर रहते हैं, यानी भूत प्रेत बाधा हो तो हनुमान जी दूर करते हैं, सब तरह के रोगों चाहे शारीरिक हो, मानसिक हों या भावनात्मक हों को दूर करते हैं। आप संकटों से भी छुड़वाते हैं। शर्त है मन, वचन, कर्म से बड़े श्रद्धा व आदर के साथ आपका स्मरण करें।

10. राम जी एवं सबका कार्य करने वाले

(चौपाई 27 से 30)

सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥27॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥28॥
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥29॥
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥30॥

इन चौपाइयों में कहते हैं कि सर्व समर्थ, सब कारणों के कारण, परब्रह्म परमेश्वर श्री राम के सब कार्यों को आप करने वाले हैं, तो फिर हम सबके मनोरथों को, मन की इच्छाओं को तो आप पूर्ण करते ही हैं। आप सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर एवं कलियुग सभी युगों में सजीव हैं, सबमें आपका प्रताप है। आप साधु, संतों की रक्षा करने वाले हैं।

11. सभी सिद्धियों एवं राम रसायन के स्वामी

(चौपाई 31से 34)
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥31॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥32॥
तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥33॥
अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥34॥

इन चौपाइयों में हनुमान जी के पास क्या है, इसका वर्णन है। कहते हैं कि आपके पास सभी प्रकार की सिद्धियाँ हैं, सभी प्रकार की निधियाँ हैं, आपके पास राम रसायन है, और आप इन सब चीजों को देने वाले भी हैं। आप ऐसे निराले हैं कि आपके भजन से राम जी की प्राप्ति हो जाती है। आपकी कृपा से राम जी की प्राप्ति कर जनम-जनम के दुःखों से मुक्त होकर जब जीव शरीर छोड़ता है तो अन्त में भगवान श्रीराम के धाम में जाता है।

12. हनुमान जी की भक्ति से सब प्राप्त

(चौपाई 35, 36)

और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥35॥
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥36॥

हनुमान जी ही सर्व समर्थ हैं। इन्हीं के चरणों को पकड़ें, इन्हीं के आश्रय रहें, इन्हीं की पूरे मनोयोग से वंदना करें, इनकी भक्ति से ही सब कुछ मिलने वाला है। इनके स्मरण मात्र से ही संकट दूर हो जाता है।

13. गुरु की तरह कृपा की प्रार्थना

(चौपाई 37)

जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहुँ गुरुदेव की नाईं ॥37॥

इन्द्रियों के स्वामी हनुमान जी की जय हो, जय हो, जय हो। हे हनुमान जी, आप गुरु की तरह कृपा करें।

14. हनुमान चालीसा की महिमा

(चौपाई 38, 39)

जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहिं बंदि महा सुख होई ॥38॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥39॥

इन दो चौपाइयों में श्री हनुमान चालीसा की महिमा बतायी गयी है कि जो सौ बार इसका पाठ करे वह समस्त बंधनों से मुक्त होता है। और इसके पाठ से व्यक्ति सिद्ध हो जाता है। इस बात के प्रमाण भगवान शंकर हैं। श्री हनुमान चालीसा की महिमा के साक्षी भोलेनाथ शंकर भगवान हैं।

15. हृदय में वास की प्रार्थना

(चौपाई 40)

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥40॥

तुलसीदास जी प्रार्थना करते हैं, "हे हनुमान जी, मैं आपका शिष्य हूँ, आपका सेवक हूँ, आप मेरे हृदय में डेरा डाल दीजिये, कैम्प कीजिये, दिल में बस जाइये।"

16. राम, लखन, सीता सहित हृदय में वास की प्रार्थना

(दोहा 3)

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

चालीस चौपाइयों के बाद के दोहे में श्री हनुमान जी से प्रार्थना है। हे पवनसुत, हे संकट हरण करने वाले, हे मंगल की मूर्ति आप श्रीराम जी, लक्ष्मण जी एवं सीता जी सहित हमारे हृदय में वास करो।

सियावर रामचन्द्र शंकर हरिः ॐ।
पवनसुत हनुमान की जय।





श्री हनुमान चालीसा

16 शीर्षकों द्वारा विस्तृत व्याख्या

1. सद्‌गुरु के चरण रज से मन दर्पण की सफाई

(दोहा 1)

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥

श्रीगुरु = सद्‌गुरु, चरन = चरण, सरोज = कमल, रज = धूलि, निज मनु = अपने मन की, मुकुरु = दर्पण, सुधारि = साफ करके, बरनऊँ = वर्णन करते हैं, रघुबर = रघुवंश के श्रेष्ठ पुरुष, बिमल = निर्मल, जसु = यश, जो दायकु = जो देनेवाला है, फल चारि = चारों प्रकार के फल।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि श्री सद्‌गुरु के चरण कमलों की धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को साफ करके रघुबर के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ। जो चारों प्रकार के फल प्रदान करने में समर्थ हैं।

'हनुमान जी' 'रघुबर' कैसे?

यह दोहा गोस्वामी जी ने अयोध्याकांड (श्रीरामचरितमानस) में भी लिखा है। इस कांड के प्रथम भाग में श्रीराम जी का यश गाया है एवं बाद में श्री भरत जी का सुंदर यश तथा महिमा गायी गयी है। तो वहाँ पर 'रघुबर' शब्द का अर्थ श्री राम भी है एवं भरत भी है। रघुबर मायने रघुवंश के श्रेष्ठ पुरुष। रामचन्द्र जी रघुवंश में अवतरित हुए इसलिये उन्हें रघुबर कहते हैं। भरत जी भी रघुवंश

के ही हैं, अत: वे भी रघुबर ही हुए। यह बात तो समझ में आती है। लेकिन यहाँ तो हनुमान जी का यश गाया है, उन्हें रघुबर कैसे कह दिया? इनका जन्म रघुवंश में तो हुआ नहीं। तब ये रघुबर कैसे कहे जा सकते हैं?

श्रीराम सीता ने हनुमान जी को पुत्र माना अतः 'रघुबर'

भले ही हनुमान जी का जन्म रघुवंश में नहीं हुआ हो, लेकिन राम जी ने उन्हें अपना पुत्र मान लिया था और सीता जी ने भी श्री हनुमान जी को अपना पुत्र मान लिया था। तो, जब सीता राम जी ने उन्हें अपना पुत्र मान लिया, तब रघुवर तो वे हो ही गये। अत: गोस्वामी जी ने श्री हनुमान जी के लिये रघुबर, रघुवंश के श्रेष्ठ पुरुष कहकर संबोधित किया है। अब आप देखें कि सुन्दरकाण्ड में जब हनुमान जी सीता जी के पास गये तो सीता जी को जननी, जननी कहते रहे। हर बार माँ, माँ कहकर पुकारते हैं। फिर सीता जी ने भी उनको पुत्र ही कहा है। सीता जी हनुमान जी से पूछती हैं, "हैं सुत कपि सब तुम्हहिं समाना।" हे सुत, हे मेरे प्यारे बच्चे, क्या सारे कपि तुम्हारे ही जैसे छोटे छोटे हैं। तब हनुमान जी ने बड़ा विशाल रूप करके दिखाया। इसी प्रकार जब वे सीता जी का संदेश लेकर वापस आये तो रामचन्द्र जी ने भी उन्हें पुत्र कहा। इस प्रकार हनुमान जी रघुवंशी हो गये। और श्रेष्ठ तो हैं ही, इसमें क्या संदेह है?

जीवन में संबंध सिर्फ जन्म से नहीं होते

अब देखो, जीवन में जो संबंध होते हैं, वे क्या केवल जन्म से ही होते हैं? ऐसा भी देखने में आता है, कई बार एक ही परिवार में जन्में दो सगे भाई बहुत लड़ते-झगड़ते रहते हैं, बन्धुओं जैसे तो रहते नहीं बल्कि शत्रुओं जैसे रहते हैं। कई बार दूसरे लोगों के साथ हमारा संबंध रक्त संबंधियों से ज्यादा प्रगाढ़ हो जाता है। हम किसी को भाई, बहन, माता-पिता मान लेते हैं, तो फिर उनसे हमारा संबंध उसी प्रकार का हो जाता है। कई बार अपने घर के सेवक को भी हम अपने परिवार के सदस्य जैसा मान लेते हैं। हनुमान जी का जन्म रघुवंश में नहीं हुआ लेकिन राम जी व सीता जी ने उन्हें अपना पुत्र माना तब रघुवर तो वे हो ही गये।

हनुमान जी का यशगान चारों तरह के फल प्रदान करता है

देखिए हम साधारण मनुष्यों का यशगान तो करते ही रहते हैं, उससे हमें किसी पुण्य की प्राप्ति तो होती नहीं, भले ही कोई नौकरी मिल जाये। श्री हनुमान

जी का यशगान धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों तरह के फल प्रदान करता है। *धर्म*– जो हमें पवित्र करे, उसे ही धर्म या पुण्य कहते हैं। *अर्थ*– धन को ही अर्थ माना जाता है। *काम*– सब प्रकार के भोगों की प्राप्ति। *मोक्ष*– इन सब बंधनों से छुटकारा। तो हनुमान जी के यशगान से ये चारों फल प्राप्त होते हैं।

श्री हनुमान जी के यशगान से पहले मन शुद्ध कैसे करें?

अब देखो ऐसे महान् रामभक्त हनुमान जी के यशगान के लिए हमारी वाणी भी शुद्ध होनी चाहिए, मन पवित्र होना चाहिए। शुद्ध मन में ही भगवान का साक्षात् प्रतिबिम्ब पड़ता है। तो मन को पवित्र कैसे करें? 'श्रीगुरु चरन सरोज रज' गुरु के चरण-कमलों की धूलि से। गुरु बहुत श्रेष्ठ हैं। उनके चरण कमल भी श्रेष्ठ हैं। हममें अभी इतनी पात्रता नहीं कि हम उनके पास जाकर उनके चरण कमलों का स्पर्श कर सकें, अभी हमारी योग्यता बहुत थोड़ी है। चरण कमल छोड़िये, चरण कमलों की पादुकाएँ भी हमारे लिये बहुत दूर हैं। हमें तो उनके चरण कमलों की धूलि ही मिल जाये तो बड़ी बात है। हमारी योग्यता बस इतनी ही है। लेकिन, यह धूलि ऐसी है कि हमें पावन पूत कर देती है, पवित्र कर देती है। अभिप्राय यह है कि अत्यंत दीनता से, नम्रता से गुरु की सेवा करें, सत्संग करें तब धीरे-धीरे ज्ञान प्राप्त हो जायेगा। यहाँ पर 'श्री गुरु' कहा है। गुरु = सिखाने वाले, श्री = ऐश्वर्य, ब्रह्म विद्या। अत: जो ब्रह्म विद्या का ज्ञान प्रदान करे, वही 'श्री गुरु' हैं। ऐसे श्री गुरु का सत्संग करें, सेवा करें, उनकी बातों को, शिक्षा को जीवन में धारण करें। उनकी कृपा से धीरे-धीरे हमारे मन के कलुषित विचार, भावनायें साफ होंगी। उस शुद्ध, स्वच्छ मन से महान् रामभक्त श्री हनुमान जी का यश गायें।

2. श्री हनुमान जी का आहवान एवं बल, बुद्धि, विद्या की याचना

(दोहा 2)

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल, बुधि, विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

बुद्धिहीन = जिसमें बुद्धि ही नहीं है, तनु = शरीर, जानिके = जानता हूँ, सुमिरौं = स्मरण करता हूँ, पवन कुमार = वायु देवता के पुत्र, बल = शक्ति, बुधि = बुद्धि वह साधन है जिसके द्वारा हम विद्या प्राप्त करते हैं, विद्या = जो

हमें समस्त बन्धनों से छुड़ा सके, देहु मोहिं = प्रदान कीजिये, हरहु = दूर कीजिये, कलेस = क्लेश, विकार = काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, ये सब मन के विकार हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं, "मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि मैं बुद्धिहीन शरीर हूँ। अब मैं पवन कुमार हनुमान जी का स्मरण करता हूँ। आप मुझे बल प्रदान कीजिये, बुद्धि दीजिये, विद्या दीजिये और हमारे मन के सारे क्लेशों को दूर कीजिये, मन में जो अनेकों विकार आते रहते हैं, उनको भी दूर कीजिये।"

स्मरण मात्र से हनुमान जी प्रसन्न, क्या मांगें उनसे?

हनुमान जी का स्मरण किया तो हनुमान जी प्रसन्न हो गये। स्मरण मात्र से प्रसन्न हो गये। हनुमान जी ने कहा क्या चाहिये आपको? बोले, महाराज बहुत सी चीजें चाहिये। आप मुझे बल प्रदान कीजिये, बुद्धि दीजिये, विद्या दीजिये और हमारे मन के सारे क्लेशों को दूर कीजिये, मन में जो अनेकों विकार आते रहते हैं, उनको भी दूर कीजिये।

विकार व क्लेश क्या हैं? इन्हें दूर करने के लिए बल चाहिये –

काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या – ये सब मन के विकार हैं। प्रलोभन में फँस जाना विकार है। भयदायक स्थिति देखकर भयभीत होना विकार है। जरा किसी ने कुछ कह दिया तो क्रोध करना विकार है। जो हमको पीड़ा देने वाले हैं वे सब क्लेश हैं। ये क्लेश व विकार कैसे दूर हों? इनको दूर करने के लिए बल चाहिए। शारीरिक बल से केवल काम नहीं चलता। बड़े-बड़े हट्टे कट्टे पहलवान भी काम, क्रोध के वश में बुरी तरह फंस जाते हैं। जीवन में यदि हम कुछ निश्चय करते हैं तो उसको पूरा करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है। यदि हमने सुबह जल्दी उठने का निश्चय किया तो प्राय: यह निश्चय टिक नहीं पाता क्योंकि इसके लिए शक्ति की आवश्यकता होती है। शक्ति के अभाव में हमारा निश्चय टूट जाता है। धर्म पालन करने के लिए बहुत बड़े बल की आवश्यकता होती है। वह बल आप मुझे दीजिये। धर्म पालन का बल आयेगा तभी विकार भी दूर होंगे। अत: आप बल प्रदान कीजिए।



'बुद्धि' विद्या प्राप्त करने का साधन

देखने में बुद्धि व विद्या दोनों एक ही हैं। बुद्धि वह साधन है जिसके द्वारा हम विद्या प्राप्त करते हैं। हमारे पास बुद्धि का साधन होते हुए भी क्या हम विद्या प्राप्त करने का प्रयास करते हैं? जो हमें समस्त बन्धनों से छुड़ा सके वास्तव में वही विद्या है। मुझे ऐसी बुद्धि दीजिये जो अच्छे बुरे का निर्णय करने में समर्थ हो, केवल पैसे कमाना, घर चलाना, व्यापार करना, भोग कैसे करना केवल इतना ही जानने वाली बुद्धि न हो।

शरीर को ही अपना स्वरूप मानना 'बुद्धिहीन तनु' है

हनुमान जी ने कहा सब कुछ मुझसे ही क्यों मांगते रहते हो? तुम भी कुछ करो न। बोले, "महाराज! मुझमें इतनी शक्ति होती तो क्या कहना? मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं बुद्धिहीन तनु (शरीर) हूँ। मैं ऐसा शरीर हूँ जिसमें बुद्धि ही नहीं है। यह शरीर तो हड्डी, मांस व खून से भरा है, इसमें अपने आप में कोई बुद्धि नहीं है। इस शरीर को ही मैंने अपना स्वरूप मान लिया है, यही बुद्धिहीनता का लक्षण है। जब व्यक्ति स्वयं को अपना शरीर ही समझ लेता है तो उसमें कोई बल नहीं होता। चूंकि मैंने अपने आपको शरीर मान लिया है अत: बड़ा बुद्धिहीन हूँ, और मुझमें बल भी नहीं है। इसलिये मैं आपके

पास आया हूँ। आप ही मुझे बल, बुद्धि, विद्या दीजिये एवं हमारे क्लेशों एवं विकारों को दूर करिये।

श्री हनुमान चालीसा के एक-एक शब्द ऐसे हैं कि उनका वर्णन करते जायें, तो वह चलता ही रहेगा। अब चौपाइयों का वर्णन करते हैं।

3. हनुमान जी का रूप, सौंदर्य, गुण, जन्म, स्वरूप

(चौपाई 1 से 8)

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहु लोक उजागर ॥1॥

इन्द्र के वज्र को सहने की शक्ति अतः 'हनुमान'

जय हनुमान-हनुमान जी की जय हो। हनुमान जी को तो सब जानते हैं, लेकिन 'हनुमान' का अर्थ बहुत से लोगों को पता नहीं होता। 'हनु' का अर्थ होता है ठोड़ी, जिसे इंग्लिश में 'चिन' कहते हैं। तो जिसके 'हनु' हो वह हनुमान। वैसे तो सबके हनु है, परन्तु हनुमान जी को 'हनु' का विशेषण मिला है। जब उनका जन्म हुआ वे शिशु थे, तभी फल समझकर सूरज को निगलने के लिए उन्होंने आकाश में उड़ान भरी थी। तब इन्द्र भगवान ने कहा यह कौन बालक आ गया है जो सूरज को ही निगल रहा है? तो उन्होंने अपने वज्र का प्रहार इनके मुख पर किया। उसी से इनकी ठोड़ी कुछ कटी हुई, फूली सी दिखाई देती है, उनका मुँह भी कुछ फूला सा दिखाई देता है। वज्र के बारे में ऐसी प्रसिद्धि है कि इसका आघात कोई नहीं सहन कर सकता, आघात पर मृत्यु निश्चित है। लेकिन हनुमान जी ने जन्म लेते ही वज्र का आघात सह लिया। जिसमें इन्द्र के प्रबल शस्त्र वज्र को सहने की शक्ति हो वही हनुमान है।

हनुमान जी ज्ञान व गुणों के सागर

हनुमान जी में सारे के सारे सतगुण हैं। सत्गुण जैसे विवेक, वैराग्य, शम, दम, दया, प्रेम, करुणा, मैत्री इत्यादि उनमें हैं। हनुमान जी का चरित्र देखने से ज्ञात होता है कि इन्हें साहित्य, संगीत, व्याकरण, वेद, उपनिषद, राजनीति एवं लोक व्यवहार का ज्ञान है। इन्हें भक्ति व वैराग्य का भी ज्ञान है। इन्हें सब प्रकार का



ज्ञान है। जब 'सागर' कह दिया मतलब इनके गुणों व ज्ञान के भंडार को गिनाया नहीं जा सकता। लेकिन जब कोई परिस्थिति उत्पन्न होती है तो उस परिस्थिति के अनुसार उनका एक-आध गुण प्रकट हो जाता है। उदाहरण के लिए जैसे दुष्ट लोग संतों को बहुत कष्ट देते हैं, संत उन्हें क्षमा करते रहते हैं, तब संतों का क्षमा गुण हमको मालूम पड़ता है। अगर दुष्ट लोग कभी उन्हें तकलीफ दें ही नहीं तो उनके क्षमा गुण का पता कैसे चले। किसी किसी प्रसंग में, परिस्थिति के अनुसार कोई-कोई ज्ञान या गुण प्रगट भी होते हैं, लेकिन उनका ज्ञान व गुण उतना ही नहीं होता। श्री हनुमान जी ज्ञान व गुणों के सागर हैं।

हनुमान जी कपियों के हृदय में राज करने वाले

'जय कपीस', कपि का अर्थ होता है वानर और कपीस मायने वानरों के राजा। वैसे देखा जाये तो वानरों के राजा बालि थे, उसके बाद सुग्रीव हुए। लेकिन यहाँ गोस्वामी तुलसीदास जी ने हनुमान जी को कपीस कह दिया। वास्तव में

जो सबके हृदय में राज करे वही राजा होता है। तो भले ही बालि राजा हों या सुग्रीव, सबके हृदय में राज करने वाले तो हनुमान जी ही थे। इन्होंने प्रेम से सबको जीत लिया है। कोई तलवार के बल पर या शस्त्र के बल पर किसी राज्य को प्राप्त कर भी ले तो भी वह सदा राजा बना नहीं रह सकता। कुछ समय के लिये तो सब लोग उसे राजा मान लेते हैं, लेकिन समय के साथ-साथ उसका सिंहासन टूट जाता है। परन्तु हनुमान जी ने जो राज्य किया हमेशा के लिये है।

हनुमान जी सदा ब्रह्म सुख में रहते हैं

कपि का अर्थ मात्र 'वानर' ही नहीं होता। हनुमान जी 'कपीस' क्यों कहे गये उसका दूसरा अर्थ भी है। दूसरे जितने कपि थे उनका रूप व व्यवहार दोनों ही वानरों जैसा था। उनमें कोई विलक्षणता नहीं थी। 'क' का अर्थ होता है ब्रह्म सुख और 'पि' का अर्थ होता है पीने वाला। जो सदा ही ब्रह्म सुख में रहे, ब्रह्मानन्द में मग्न रहे, उसको कपीस कहते हैं। ये सारे कपियों में सर्वश्रेष्ठ हैं।

यश तीनों लोकों में प्रकाशित

'तिहुं लोक उजागर' – हनुमान जी का यश, उनका नाम तीनों लोकों में फैला हुआ है और तीनों लोक उससे प्रकाशित (उजागर) हो रहे हैं। आपके कारण तीनों लोक प्रकाशित हो रहे हैं। आपका यश सब ओर फैल गया और उससे तीनों लोक प्रकाशित हुए।

रामदूत अतुलित बलधामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥2॥

व्यवहार में हमेशा राम के सेवक

हनुमान जी में इतने सब गुण होते हुए भी व्यवहार में राम जी के दूत बने रहे, उनके सेवक बने रहे।

हनुमान जी में अतुलनीय बल है

पहली ही चीज जो हनुमान जी में दिखाई देती है वह अतुलनीय बल है। इतना बल है कि उसकी तुलना नहीं की जा सकती है। अत: कह दिया 'अतुलित'। यहाँ ध्यानपूर्वक समझने की बात है कि शारीरिक बल तो उनमें था ही, साथ ही

मन का नैतिक बल भी था जो बड़े बड़े दुष्ट लोगों को भी झुका देता है, नष्ट कर देता है। हनुमान जी का बल काम और राग से रहित था।

हनुमान जी अंजनी-केसरी पुत्र व वायु पुत्र

रावण ने घोर तप करके ब्रह्मा जी से ऐसा वरदान मांग लिया था कि नर व वानर को छोड़कर उसे कोई मार न सके। यह वर पाकर वह इतना अत्याचारी व दुराचारी बन गया कि उसने सबको अपने वश में कर लिया था। देवता, ऋषि, मुनि सभी ने घबराकर भगवान से प्रार्थना की, भगवान ने राम रूप में मनुष्य बनकर आने का वचन दिया। ब्रह्मा जी ने सारे देवताओं को कहा कि तुम वानर बनकर पृथ्वी पर जाओ और मनुष्य रूप में अवतरित हुए श्री राम की सेवा करो। तो सारे देवताओं ने अपने-अपने तेज से अनेक वानर उत्पन्न किये। अंजनी नाम की एक वानरी थी जिसका विवाह केसरी नाम के वानर से हुआ था। वायु देवता ने अपना तेज अंजनी वानरी पर स्थापित कर दिया। उन्हीं से जो पुत्र हुआ वही हनुमान जी हैं। अत: हनुमान जी अंजनि-केसरी पुत्र भी हैं, वायु पुत्र भी हैं। इनका नाम वायुपुत्र होने के कारण पवनसुत भी है। ये अंजनि पुत्र, पवन पुत्र, केसरी नंदन कहे जाते हैं।

हनुमान जी ऐसे अंजन जो राम दर्शन करा दे

अंजनी का अर्थ है 'अंजन।' अंजन का एक अर्थ होता है 'काजल' जिसे आँखों में लगाते हैं। लेकिन यहाँ जिसकी बात कह रहे हैं वह सामान्य अंजन नहीं है, वह तो ऐसा अंजन है जो रामदर्शन करवाने वाला है, इस रामदर्शन करवाने वाले अंजन का नाम हुआ शुद्ध बुद्धि। तो हनुमान जी अंजनि अर्थात् शुद्ध बुद्धि के नंदन हुए।

हनुमान जी हमारी 'प्राण वायु' इनके बिना कुछ हो ही नहीं सकता

गोस्वामी तुलसीदास जी को पवनकुमार या पवनसुत एवं हनुमान नाम बहुत प्रिय है। हनुमान का अर्थ तो देख लिया अब पवनसुत का अर्थ समझते हैं। पवन मायने वायु। वायु देवता ऐसे हैं जो चौबीसों घंटे हमारी सेवा करते रहते हैं, लेकिन कहीं पर भी उनका प्रगट रूप दिखाई नहीं देता। सूरज का उदय-अस्त दिखाई देता है, सूरज हमारी सेवा कर रहा है यह तो दिखाई देता है, यदि कभी सूरज न निकले तो उनकी कमी खलने लगती है। इसी



प्रकार अपने शरीर में हमारी आँख, नाक, कान ये सारी इन्द्रियाँ भी हमारी सेवा करती रहती हैं, उनकी सेवा हमें दिखती रहती है, लेकिन जो प्राणवायु चौबीस घंटे हमारे साथ है उसकी ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता है। तो वायु देवता कैसे हैं? बिना प्रदर्शन किए सतत् सेवा करने में सबसे श्रेष्ठ हैं। इनके बिना कुछ हो ही नहीं सकता। देखिये, आँख के बिना, अन्य इन्द्रियों के बिना आदमी रह सकता है, लेकिन प्राण के बिना नहीं रह सकता है। तो हनुमान जी हमारे प्राण हैं। सदैव हमारे साथ हैं। सबमें प्राण का संचार करते हैं, कहीं पर प्रदर्शन नहीं करते। जिनके बिना कहीं कोई काम नहीं चलता ऐसे हैं पवनसुत। और हमारे हनुमान जी ही पूरी रामायण के भी प्राण हैं। रामायण रूपी महामाला के रत्न हनुमान जी ही हैं।

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥3॥

हनुमान जी में सब प्रकार की वीरता है अतः 'महाबीर'

'वीर' मायने बड़ा साहसी व्यक्ति। जो युद्ध भूमि में बड़ा बहादुर होता है, उसे वीर कहते हैं। परंतु वीरता केवल युद्ध में नहीं होती, अनेक प्रकार की होती है। युद्ध भूमि में वीर को 'रणवीर' कहते हैं। वीरता जब विद्या में होती है तो 'विद्यावीर' कहते हैं। जब व्यक्ति दान करने में वीर हो तो उसे 'दानवीर' कहते हैं। जैसे राजा कर्ण दानवीर कहलाते हैं। जो व्यक्ति धर्म का पालन श्रेष्ठता से करता है उसे 'धर्मवीर' कहते हैं। जो बड़े दयालु, करुणामय होते हैं उन्हें 'दयावीर' कहते हैं। हनुमान जी में सब प्रकार की वीरता पाई गई है। इनमें पाँचों प्रकार की वीरता जैसे दया, धर्म, दान, बल और विद्या हैं अतः हमारे श्री हनुमान जी 'महावीर' हैं। प्रभु श्रीराम स्वयं इनका यश गाते हैं, इसलिये

भी ये महावीर हैं। जिस वीर पुरुष का यश स्वयं भगवान श्रीराम गायें वही महावीर है।

हनुमान जी महाबीर के साथ पराक्रमी भी

विक्रम मायने पराक्रमी। कई लोग बड़े हट्टे कट्टे होते हैं लेकिन कोई विकट परिस्थिति आये तो भाग खड़े होते हैं। उनमें पराक्रम नहीं होता। हनुमान जी बलवान के साथ-साथ पराक्रमी भी हैं।

हनुमान जी का अंग-अंग वज्र के समान

'बजरंगी'– हम लोग बोलते हैं बजरंग बली की जय। बजरंग का संस्कृत में अर्थ होता है 'वज्र अंग'। जिसका अंग-अंग वज्र के समान हो उसे कहते हैं बजरंगी। जैसे कहा जाता है फौलादी शरीर, फौलाद याने स्टील जैसा शरीर, तो हनुमान जी का शरीर वज्र के समान फौलादी है।

कुबुद्धि से दूर सुबुद्धि के साथ रहते हैं

'कुमति निवार'– हनुमान जी कुमति को दूर करने वाले हैं। ऐसा भी कह सकते हैं कुबुद्धि वाले जो लोग हैं उनको दूर हटा देने वाले हैं। अधर्म की ओर जाने वाली बुद्धि कुमति है। भगवान से दूर ले जाने वाली बुद्धि कुमति है। 'सुमति के संगी' हनुमान जी अच्छी बुद्धि वाले लोग, सुमति वालों के साथ रहते हैं। धर्म की ओर ले जाने वाली बुद्धि सुमति है। भगवान की तरफ ले जाने वाली बुद्धि सुमति है। इन्हीं के साथ हनुमान जी हैं।

कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥4॥

कंचन = सोना, बरन = रंग, बिराज = प्रकाशित, सुबेसा = सुंदर देह, कानन = कान, कुंचित = घुंघराले, केसा = बाल।

सोने के समान चमचमाता सुंदर शरीर

हनुमान जी की बड़ी सुंदर देह है जिसका रंग सोने के समान है एवं वह प्रकाशित हो रही है। उनके कानों में कुंडल हैं और बाल घुंघराले हैं। जैसे कहा,

"अतुलित बलधामं हेमशैलाभदेहं," मानो कोई सोने का चमकता हुआ पर्वत हो, ऐसा इनका शरीर है और चमक दमक रहा है। इस प्रकार उनके रूप का वर्णन किया गया। आगे और वर्णन करते हैं।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥5॥

वज्र, ध्वज व जनेऊ से सुशोभित

हनुमान जी के हाथ में वज्र भी है और ध्वजा भी है। वज्र तो इन्द्र के हाथ में रहता है, इनके हाथ में तो गदा होती है, यहाँ आशय है उनकी गदा वज्र के समान है, वह इन्द्र के वज्र से कम नहीं है। हाथ में ध्वजा भी है जो विजय का प्रतीक है। इसका दूसरा भी अर्थ होता है। सामुद्रिक लक्षणों के अनुसार अवतारी पुरुषों के हाथ में एवं पांव में शंख, चक्र, वज्र, गदा, ध्वज आदि के चिह्न होते हैं। तो हनुमान जी के हाथ एवं पांव में वज्र और ध्वजा के चिह्न हैं। ये उनकी श्रेष्ठता के लक्षण हैं। कंधे में मूंजा नाम की पवित्र घास से बना हुआ जनेऊ पहन रखा है। यह जनेऊ संस्कार का प्रतीक है, तो हमारे हनुमान जी बड़े संस्कारी भी हैं।

संकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥6॥

हनुमान जी साक्षात् शंकर जी ही हैं

गोस्वामी तुलसीदास जी ने एक ओर तो कहा अंजनि पुत्र, फिर कहा पवनसुत और अब कहते हैं 'शंकर सुवन'। ये शंकर जी के पुत्र हैं, अच्छे पुत्र हैं। फिर बोले ये शंकर जी के पुत्र नहीं स्वयं भगवान शंकर ही हैं, साक्षात्। इसका अभिप्राय देखें। ऐसा कहा जाता है जब राम जी का अवतार हुआ तो शंकर भगवान के मन में आया कि मैं भगवान की सेवा करूँ और अपने इष्ट श्रीराम की ऐसी सेवा करूँ, ऐसा सेवक बनूँ कि उन्हें सेवा लेने में किसी प्रकार का संकोच न हो। यदि नर बन कर जाऊँगा तो सब प्रकार की सेवा नहीं हो सकती, पशु बनकर जाऊँगा तो सब प्रकार की सेवा कर सकता हूँ। जैसे हनुमान जी ने भगवान से कहा कंधे पर बैठ जाइये, बैठ गये। जैसे हमारे पास घोड़ा है

तो घोड़े पर बैठने में संकोच नहीं होगा, परंतु मनुष्य पर तो नहीं बैठ सकते। लक्ष्मण जी ने भी सेवा की मनुष्य रूप में, अब राम जी कितने भी थके हों, लक्ष्मण जी से तो नहीं कहेंगे तुम मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर ले चलो। लक्ष्मण जी की पीठ पर तो नहीं बैठेंगे भले ही लक्ष्मण जी तैयार हों। परन्तु पशु रूप में होने से शंकर जी से भगवान राम सब प्रकार की सेवा ले सकते हैं। तो हनुमान जी स्वयं शंकर भगवान ही हैं। हनुमान जी में जो तेज है वह शंकर जी का है। शंकर का अर्थ होता है 'शम' कल्याण करने वाले। शंकर पुत्र होने से स्वाभाविक रूप से सबका कल्याण करने वाले हैं। हनुमान जी केसरी नंदन भी हैं। अंजनी-केसरी के पुत्र हैं। केसरी का एक अर्थ होता है सिंह, शेर। तो भले ही इनके पिता वानर रूप में हों, लेकिन वे भी बड़े पराक्रमी हैं।

हनुमान जी अत्यंत तेजस्वी व प्रतिभाशाली

इनका तेज भी महान् है और प्रताप भी महान् है। ये अत्यंत तेजस्वी, प्रतापशाली हैं। इनका तेज प्रताप ही ऐसा है कि जो इनके सामने आता है फीका पड़ जाता है। ये ऐसे हैं कि रावण के भरे दरबार में सबके सामने रावण को ही सुनाने लगे। रावण कुछ कर नहीं पाया। रावण का तेज हनुमान जी के सामने फीका पड़ गया। अत: हनुमान जी जगत में वंदनीय हो गये। सारा जगत इनकी वंदना करता है।

विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥7॥

श्रीराम जी का कार्य करने के लिए सदैव तैयार

हनुमान जी विद्यावान हैं इनमें सारी विद्यायें हैं। सारे गुण हैं। अत्यंत चतुर हैं। चतुर से आशय ये बड़े व्यवहार कुशल हैं। कोई कोई लोग पढ़े-लिखे तो बहुत होते हैं लेकिन उनमें व्यवहार कुशलता नहीं होती। व्यवहार कैसे करना है वे नहीं समझते। हनुमान जी विद्वान, गुणवान होने के साथ-साथ व्यवहारी भी हैं। हनुमान जी तो बस राम जी के मुख से कोई शब्द निकले और उसका पालन करने को सदैव तैयार रहते हैं। आलस्य तो जरा भी नहीं है। हनुमान जी श्रीराम का कार्य करने को कितने आतुर रहते हैं इसके कई दृष्टान्त हैं। समुद्र को पार करके सीता जी का पता लगाने जब लंका जा रहे थे तो बीच में मैनाक

पर्वत आया और उसने हनुमान जी से कहा, "थोड़ी देर विश्राम कर लो।" वे बोले, *"राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम।"* राम जी का काम किये बिना मैं विश्राम कैसे करूँ? तो देखो, इसे कहते हैं भगवान का काम करने की आतुरता। लक्ष्मण जी को जब शक्ति लगी, वे युद्ध भूमि में गिर पड़े। तब यह बताया गया कि संजीवनी बूटी लानी पड़ेगी और वह भी रातों-रात ही यदि ला सकें तभी बात बनेगी, अन्यथा इनको बचाना कठिन है। हनुमान जी बोले गरम तेल में राई डालने और उसे फूटने में जितना समय लगता है, उतने समय में मैं जाकर लौट आऊँगा। ये है राम काज करने की आतुरता।

राम का काम तो दूर हमसे राम नहीं बोला जाता

हम लोग जो हैं, प्रभु श्रीराम का काम क्या करेंगे? हमसे तो राम नाम भी नहीं लिया जाता। हम बाकी सब चीजों में तो बड़े चतुर होते हैं, परन्तु राम नाम नहीं लिया जाता। कोई होते हैं, जो राम नाम तो लेते रहते हैं, लेकिन राम जी का काम लेने को तैयार नहीं होते हैं।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥8॥

काम के समय काम, फुर्सत में राम नाम

हनुमान जी काम के समय में काम करते हैं, जब काम नहीं होता तब राम नाम स्मरण करते रहते हैं, या फिर कोई कथा सुनाने वाला आ जाये तो फिर कथा सुनते रहते हैं। हनुमान जी श्रीराम चरित्र सुनने के सबसे बड़े श्रोता हैं। ये बड़ा रस लेकर, आनंद के साथ कथा सुनते हैं।

तुलसीदास जी की कथा में हनुमान जी आते थे

हनुमान जी तो राम चरित्र के कथा श्रवण के ऐसे रसिया हैं कि जहाँ कहीं भी रामकथा हो रही हो वहीं जाकर बैठ जाते हैं। ऐसा कहा जाता है तुलसीदास जी भी जब चित्रकूट के घाट पर कथा सुनाते थे, तो हनुमान जी आकर बैठ जाते थे, कथा सुनने के लिए। हनुमान जी ने ही उनको रामदर्शन कराया। कथा में वे किस रूप में आकर बैठ जायें इसका पता नहीं। कथाकार हनुमान जी का आह्वान जरूर करते हैं।



हनुमान जी की कथा में आकर आसन पर विराजने की सत्य घटना

आपको एक सत्य घटना बताते हैं। एक कथाकार थे, उनका नाम मुझे याद नहीं है। उनकी कथा में हनुमान जी का आसन रखा जाता था। कथा प्रारंभ करने के पहले हनुमान जी का आह्वान किया जाता था कि कथा प्रारंभ हो रही है, आप कथा में पधारिये। एक नास्तिक व्यक्ति बोले, "आप लोग हनुमान जी का आह्वान आदि यह सब क्या करते रहते हो, क्या कभी हनुमान जी आकर कथा सुनते हैं?" पंडित जी ने कहा, "देखो भई यह बात श्रद्धा की होती है, उसमें इस प्रकार संशय करना ठीक नहीं।" नास्तिक ने कहा, "इसका क्या प्रमाण है कि हनुमान जी यहाँ पर आते हैं।" कथाकार ने कहा, "देखो भई, मैं कोई इतना बड़ा भक्त तो नहीं हूँ कि तुमको हनुमान जी का दर्शन करा दूँ। लेकिन मेरी ऐसी श्रद्धा अवश्य है कि हनुमान जी आकर कथा सुनते हैं। फिर भी यदि आपको प्रमाण चाहिये तो देख लेना, मिलना होगा, तो वह भी मिल जायेगा।"

दूसरे दिन भी यथावत् हनुमान जी का एक आसन (जिसे कोई बच्चा भी सरलता से उठा सकता हो) सजा दिया गया। कथाकार ने हनुमान जी की बड़ी प्रार्थना की, हनुमान जी का आह्वान किया और कहा देखो हमारी ऐसी भावना है कि हनुमान जी आकर आसन पर विराज गये हैं। उस नास्तिक व्यक्ति ने

कहा, "क्या प्रमाण है?" तब कथाकार ने कहा, "अब आप इस आसन को उठाकर देख लीजिये।" वह आदमी उठकर उस आसन को उठाने जाता है, परंतु वह आसन जाने कितना भारी हो गया कि उठता ही नहीं। फिर उस आसन को उठाने के लिए अन्य लोग भी बुलाये गये। वे सब मिलकर उस आसन को उठाने का प्रयत्न करते हैं, पर वह उठता ही नहीं। तब उस नास्तिक ने पंडित जी के पैर पकड़ लिये और बोला, "महाराज! आप ठीक कहते हैं, हनुमान जी बैठे हैं आसन पर।"

चिरंजीवी हनुमान एवं उनका दर्शन

हनुमान चिरंजीवी हैं। हमारी बुद्धि अभी इतनी शुद्ध तो नहीं है कि वे हमें इन्हीं नेत्रों से दिखाई दें। जिसकी बुद्धि शुद्ध हो जाती है उसको उनके दर्शन भी हो सकते हैं। ये हमारे हनुमान जी ऐसे हैं जहाँ-जहाँ रघुनाथ जी का कीर्तन होता है, वहाँ-वहाँ हनुमान जी हाथ जोड़कर आँखों में प्रेमाश्रु बहाते रहते हैं। हनुमान जी प्रभु चरित्र के कथा के ऐसे रसिया हैं।

हनुमान जी के मन में राम, लखन, सीता बसे हैं

राम, लखन, सीता मन बसिया का अर्थ हुआ कि हनुमान जी के मन में ये तीनों बसे हैं। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि इन तीनों के मन में हनुमान जी बसे हैं। क्योंकि हनुमान जी ने इन तीनों की बहुत सेवा की है, तीनों को मरने से बचाया है। सीता जी अशोक वाटिका में मरने जा रही थीं, उस समय हनुमान जी ने रामकथा सुनाकर उन्हें बचाया था। लक्ष्मण जी को जब शक्ति लगी थी, तब उनको भी इन्होंने ही बचाया था। यदि सीता जी, लक्ष्मण जी नहीं रहते, तो राम जी कहाँ बचने वाले थे। इस प्रकार, उनकी रक्षा भी इन्होंने ही की। इसका एक अभिप्राय यह भी होता है कि राम जी ज्ञानस्वरूप हैं, सीता जी भक्ति स्वरूप हैं और लक्ष्मण जी मूर्तिमान वैराग्य हैं तो हनुमान जी के हृदय में ज्ञान, भक्ति व वैराग्य तीनों ही बसे हुए हैं। इसी प्रकार एक अर्थ यह भी निकल आता है कि जिसके हृदय में हनुमान जी की भक्ति आ जाती है, उसके हृदय में श्रीराम, लक्ष्मण व सीता तीनों ही निवास करने लगते हैं।

हनुमान जी की ऐसी विशेषता है कि हनुमान जी की मूर्ति के बिना श्रीराम जी का मंदिर पूरा ही नहीं होता। लेकिन हनुमान जी के मंदिर में अकेले हनुमान

जी ही पर्याप्त हैं। बात यह है कि जहाँ हनुमान जी हैं वहाँ पर श्रीराम, लक्ष्मण व सीता जी तो है हीं, क्योंकि वे उनके हृदय में हमेशा बसे रहते हैं।



4. श्री राम जी के क्या कार्य किये

(चौपाई 9 से 11)

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥9॥

अशोक वाटिका में सीता जी को छोटे से रूप में श्री रामकथा सुनाई

हनुमान जी में सब प्रकार की सिद्धियाँ थीं। उन्होंने लंका में प्रवेश करते समय मच्छर के समान छोटा सा रूप धारण कर लिया था। फिर छोटा सा रूप बनाकर अशोक वाटिका में प्रवेश कर गये व पेड़ पर बैठ गये। रावण वहाँ आया और सीता जी को डरा-धमकाकर चला गया। तब सीता जी दु:खी होकर बैठी हैं और कह रही हैं यदि मुझे अग्नि मिल जाये तो मैं अपनी इस देह को भस्म कर डालूँ। इसी समय हनुमान जी रामकथा का गान करने लगते हैं। जैसे ही सीता जी ने हनुमान जी के मुख से रामकथा सुनी उनका दु:ख भाग गया। सीता जी ने कहा जिसने इतनी सुंदर राम कथा सुनाई है वह सामने क्यों नहीं आता है। हनुमान जी प्रेम के वश में आकर उसी सूक्ष्म रूप में कूद पड़े। सीता जी ने देखा यह तो बंदर है, एक बंदर कैसे इतने सुमधुर स्वर में रामकथा सुना सकता है? चूंकि वह पहले भी मृग जाल में फँस चुकी थी, उन्हें लगा यह भी कोई राक्षसी माया तो नहीं, वेश बदलकर कोई राक्षस ही तो नहीं आ गया। इसलिये उन्होंने अपना मुँह दूसरी तरफ फेर लिया। हनुमान जी ने अपने प्रिय वचनों से उन्हें विश्वास दिलाया कि मैं राम जी का ही दूत हूँ।

विकराल रूप धारण कर लंका जलाई

हनुमान जी ने पहले तो सीता जी को सूक्ष्म रूप दिखाया, फिर उनके मन में यह विश्वास उत्पन्न करा दिया कि वे रामदूत हैं और फिर ऐसा विकराल रूप



धारण कर लिया कि पूरी लंका को जला दिया। लौकिक दृष्टि से तो हनुमान जी की पूंछ में रावण ने आग लगवा दी और उस आग से रावण की लंका को जला दिया। लेकिन वास्तव में उन्होंने किसको जलाया?

सीता जी की शोकाग्नि से लंका जलाई

रावण ने सीता जी को दुःख कष्ट दिया, सीता जी की जो दुःख रूपी अग्नि है उसे हनुमान जी ने ले लिया और इस शोकाग्नि के द्वारा उस दुष्ट की नगरी लंका को जला डाला। इसका एक अर्थ यह हुआ कि जब दुष्ट पुरुष निरपराध, निष्पाप साधु व्यक्ति को दुःख कष्ट देता है, तो उसके शोक की अग्नि इतनी प्रबल होती है कि वह सारे के सारे साम्राज्य को भी जला डालने में समर्थ हो सकती है।

हनुमान जी से प्रार्थना करें, हृदय में भोगवृत्ति रूपी लंका को जला दें

एक अर्थ यह हुआ कि हनुमान जी वैराग्य स्वरूप हैं, वैराग्य रूपी अग्नि हैं। उस वैराग्य की अग्नि द्वारा उन्होंने भोग नगरी लंका को समाप्त कर डाला। हमें भी चाहिये कि हम हनुमान जी का आह्वान करें और प्रार्थना करें कि महाराज हमारी जो हृदय रूपी नगरी है, वह अयोध्या नहीं वरन् बिल्कुल लंका बनी है, उसमें भोग की ही वृत्तियाँ उत्पन्न होती रहती हैं। जरा आप वैराग्य की अग्नि द्वारा इस लंका को जला डालिये। चाहे उसको सीता जी की शोकाग्नि कहो, चाहे हनुमान जी की वैराग्य अग्नि कहो, उससे उन्होंने लंका को जला डाला।

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचंद्र के काज सँवारे ॥10॥

राक्षसों का संहार कर राम जी का काम पूरा किया

भयंकर रूप धारण करके उन्होंने सारे असुरों का संहार कर दिया। जो भी असुर सामने आया उसे मार दिया। श्रीराम-रावण युद्ध में तो मारा ही, पर जब लंका में अकेले प्रवेश किया था, तब भी उन्होंने कई असुरों को मार डाला। श्रीराम ने असुरों का संहार कर धर्म की स्थापना का कार्य करने की प्रतिज्ञा की थी, उसे पूरा करने में हनुमान जी ने सहयोग किया। इस प्रकार राम जी का काज पूरा किया। हमारे मन में जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष की प्रवृत्तियाँ हैं, एक अर्थ में ये भी असुर ही हैं, इनके रहते ज्ञान पाना कठिन है। हनुमान जी से प्रार्थना करें इन्हें भी विकराल रूप धारण कर समाप्त कर श्रीराम दर्शन करावें।

लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥11॥

संजीवनी ला लक्ष्मण जी को जीवित किया, रामजी ने हृदय से लगाया

लक्ष्मण जी को जब इन्द्रजीत की शक्ति लगी तो वे गिर पड़े। तब हनुमान जी संजीवनी बूटी ले आये और उन्होंने लक्ष्मण जी को जीवित किया। उस समय रामचन्द्र जी के हर्ष की सीमा ही न रही। उन्होंने हनुमान जी को अपने हृदय

से लगा लिया। भगवान जब भक्तों को हृदय से लगाते हैं, तो उसे सामान्य बात नहीं समझना चाहिये। भगवान ने कहा, “हनुमान तुमने इतना बड़ा कार्य किया है कि तुमको देने के लिए मेरे पास उसके तुल्य कोई चीज ही नहीं है। आओ, मैं तुमको अपने हृदय से लगा लेता हूँ।” कोई कहेगा कि भगवान ने कुछ दिया ही नहीं केवल हृदय से लगा लिया। यही विशेष ध्यान देने की बात है कि भगवान जब भक्तों को हृदय से लगाते हैं तो अपने आपको भक्त के हृदय में रख देते हैं, इसे केवल शारीरिक आलिंगन मत समझना। इसका अर्थ है भगवान ने अपने आप को भक्त के हृदय में रख दिया। यदि आपको पता करना है भगवान कहाँ हैं तो भक्त को ढूँढो, वे भक्त के हृदय में बैठे हुए हैं, वहीं मिलेंगे।

5. हनुमान जी का यश कौन-कौन गाते हैं

(चौपाई 12 से 15)

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥12॥

राम जी ने हनुमान जी को भरत के समान प्रिय कहा

रामचन्द्र जी ने हनुमान जी की बहुत प्रशंसा की। कहा तुम तो मुझे भरत के समान प्रिय हो। ऐसा कहा जाता है भरत जी दिन रात राम जी का स्मरण करते रहते हैं। भक्त लोग भी हमेशा राम जी का स्मरण करते रहते हैं। परन्तु राम जी किसका स्मरण करते रहते थे? रामायण में स्पष्ट रूप से कहा है कि रामचन्द्र जी हमेशा भरत का स्मरण करते रहते थे। जिसका स्मरण कोई व्यक्ति हमेशा करता रहता है उसको वह व्यक्ति अत्यंत प्रिय होता है। इसलिये कहा तुम तो भरत के समान मुझे प्रिय हो। यह तो हनुमान जी की बहुत बड़ी स्तुति हुई।

सहस बदन तुम्हरों जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥13॥



लक्ष्मण जी भी हनुमान जी का यश गाते हैं, राम जी ने कण्ठ से लगाया

लक्ष्मण जी हजारों फन (सहस बदन) वाले शेषनाग का ही अवतार हैं। तुलसीदास जी हनुमान जी का यश गाते हुए कहते हैं कि लक्ष्मण जी ने भी आपका यश गाया, स्तुति की। राम जी, भरत जी, लक्ष्मण जी सब ने ही हनुमान जी की स्तुति की है। तो लक्ष्मीपति भगवान श्रीराम ने यह कहते हुए कि हे हनुमान! हजारों फन वाले शेषनाग भी तुम्हारी स्तुति करते हैं उन्हें गले से लगा लिया। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि हजारों मुख से भी यदि मैं तुम्हारा यश गाऊँ तो भी वह पूरा नहीं होगा। ऐसा कहकर भगवान उन्हें अपने हृदय से लगाते हैं, अर्थात् अपने आपको भक्त के हृदय में रख देते हैं।

भगवान की प्राप्ति का सबसे सरल उपाय – भक्त के पास रहें

यदि हमें भगवान की प्राप्ति करनी है, तो उसका सबसे सरल और सीधा उपाय यही है कि हम भक्त के साथ रहें, क्योंकि भगवान भक्त के साथ ही रहते हैं। भगवान ने स्वयं कहा है मैं बैकुण्ठ में नहीं रहता, योगियों के पास भी नहीं रहता, मेरे भक्त जहाँ पर कीर्तन करते हैं, मैं वहाँ पर रहता हूँ, भक्त के हृदय में रहता हूँ।



सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥14॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥15॥

हनुमान जी का यश कौन गाते हैं?

तुलसीदास जी कहते हैं कि भगवान श्रीराम, लक्ष्मण जी तो यश गाते ही हैं। इसके अतिरिक्त सनकादिक – सनक, सनन्दन, सनातन, सनत कुमार ये चारों, ब्रह्मा आदि देवता, बड़े बड़े मुनि जैसे वाल्मीकि, देवर्षि नारद, सरस्वती जी (सारद), साथ में शेषनाग (अहीसा), यम, कुबेर एवं अष्ट दिकपाल आदि सब आपका यश गाते हैं। लौकिक कवि, कोविद, बड़े-बड़े विद्वान भी आपका यश गाते हैं। फिर भी हे हनुमान आपके यश का पूरा वर्णन नहीं हो पाता। आप इतने यश वाले हैं।

6. सुग्रीव, विभीषण को रामदर्शन करवाया

(चौपाई 16 से 17)

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥16॥

सुग्रीव को राम जी से मित्रता करवाकर, राज्य वापस दिलवाया

लौकिक दृष्टि से देखें तो हम सब जानते हैं सुग्रीव अपने बड़े भाई बालि जिन्होंने उसका राज्य छीन लिया था, के भय से यहाँ वहाँ भटक रहे थे।

हनुमान जी ने उनकी मित्रता राम जी से करवाई। राम जी के प्रयास से बालि मारा गया, सुग्रीव को अपना राज्य वापस मिला। इस प्रकार हनुमान जी ने सुग्रीव पर बहुत उपकार किया, उन्हें राज्य वापिस दिला दिया। पर इसका आशय इतना ही नहीं, बड़ा गंभीर है।

सुग्रीव रूपी जीव की कर्म बंधन से मुक्ति

राज पद दिलाने का वास्तविक अर्थ तो यही हुआ कि जीव को उसके समस्त बंधनों से छुड़ा दिया। यह राज्य पद कोई किष्किन्धा का सामान्य राज्य पद नहीं है। यहाँ तो अपने स्वरूप का ही पद प्राप्त करा दिया। जब श्रीराम जी पर सुग्रीव का पूर्ण विश्वास हो गया तब उनके मन में ज्ञान व भक्ति का उदय हुआ। सुग्रीव ने राम जी से यही कहा कि अब तो बालि भी मुझे शत्रु दिखाई नहीं देता, मुझे तो वह मित्र ही दिखाई देता है, क्योंकि उसी के कारण मुझे आपका दर्शन हुआ, आपसे मिलना हुआ। अब तो मैं सब कुछ छोड़कर आपके चरणों की सेवा करना चाहता हूँ, मुझे अब और कुछ नहीं चाहिए। इस प्रकार हनुमान जी ने सुग्रीव को राम जी से मिलवाकर उन्हें कर्म बंधन से छुड़वा दिया।

सुग्रीव की भय से मुक्ति हनुमान जी ने करवाई

लौकिक दृष्टि से तो राम जी से मित्रता करवाकर बालि के भय से मुक्ति करवा दी। परंतु वास्तव में हनुमान जी ने सबसे बड़ा दान 'अभय दान' दिया सुग्रीव को। आदमी के पास खाने पीने को खूब हो परन्तु उसके मरण का या दूसरा भय लगा रहे तो अन्य सभी चीजों का क्या लाभ? जो दान हमें भय से मुक्त कर दे वह दान सबसे बड़ा दान है। भगवान ने कहा, "मेरा जो व्रत है कि जो मेरी शरण में आता है, एक बार भी आकर मुझ से कहता है कि मैं आपका हूँ, मैं उसको हर प्रकार से भय मुक्त कर देता हूँ।" गीता जी में कहा कि मैं उसे पाप से मुक्त कर देता हूँ। जब हम पाप करते हैं, गलत काम करते हैं तभी हमें भय लगता है। अत: भय और पाप अलग-अलग नहीं है। इस दृष्टि से पाप से मुक्ति व भय से मुक्ति एक ही बात है। जो हमें भगवान से मिला दे उससे बड़ा उपकार करने वाला भला कौन हो सकता है।



हनुमान जी राम जी को लक्ष्मण से दुगुने प्रिय क्यों?

हनुमान जी राम जी को बहुत प्रिय थे। किष्किन्धा कांड में यह प्रसंग आता है। जब हनुमान जी पहली बार राम जी से मिले, राम जी से परिचय हुआ तो श्रीराम जी इतने प्रसन्न हुए कि लक्ष्मण जी के सामने ही उन्होंने हनुमान जी से कह दिया कि तुम मुझे लक्ष्मण से दुगुने प्रिय हो। इसका अभिप्राय देखें। लक्ष्मण जी तो राम जी की सेवा करते रहते हैं लेकिन हनुमान जी ऐसे हैं कि वे राम जी की सेवा करते रहते हैं और साथ में राम जी के सेवकों की, भक्तों की भी सेवा करते रहते हैं। केवल राम जी को ही अपने कंधे पर नहीं बैठाया, उन्होंने तो लक्ष्मण जी को भी अपने कंधे पर बैठा लिया। बहुत से लोग गुरु की सेवा करने को तैयार होते हैं, परंतु गुरु के सेवकों की सेवा करने को तैयार नहीं होते। वे सोचते हैं कि हम तो भगवान की सेवा करेंगे, भगवान के भक्त की सेवा क्यों करें? लेकिन भगवान कहते हैं मुझे तो वह प्रिय है जो मेरे भक्तों की सेवा किया करता है। दूसरी बात, लक्ष्मण जी स्वयं तो भक्त हैं लेकिन अन्य लोगों को पकड़-पकड़ कर वे राम जी के पास नहीं लाते, जबकि हनुमान जी ऐसे हैं कि वे स्वयं तो भक्त हैं ही, दूसरों को भी ला-लाकर भगवान का भक्त बनाते रहते हैं।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥17॥

हनुमान जी की सलाह से ही विभीषण राम जी की शरण में

सारा जगत जानता है कि आपकी मंत्रणा, सलाह (मंत्र) को विभीषण ने मान लिया और लंका के राजा (लंकेश्वर) हो गये। यहाँ पर ध्यान देने की बात है कि विभीषण जी पहले से ही भगवान राम का नाम बहुत लेते रहते थे लेकिन

फिर भी वे राम जी के पास जाने का साहस नहीं कर पाते थे। हनुमान जी जब उनसे लंका में सीता जी की खोज करते समय मिले, उन्होंने ही उन्हें साहस दिलाया, हिम्मत बंधायी तब वे भगवान की शरण में गये। भगवान ने उन्हें लौकिक दृष्टि से लंका का राजा घोषित कर दिया।

हम सबके मन में भी विभीषण जैसी शंका है

आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो हमारा देहाभिमान (शरीर) ही लंका है और इसमें राग-द्वेष, काम-क्रोध, ईर्ष्या, छल-कपट आदि निशाचर वास करते हैं और इनके बीच में जीव रूपी विभीषण को रहना पड़ता है। हम विभीषण की तरह भगवान के भक्त तो बने रहते हैं, भगवान का नाम तो लेते रहते हैं, परन्तु जैसे विभीषण मोह रूपी रावण की सेवा करता रहता है वैसे हम भी काम-क्रोध की सेवा करते रहते हैं। विभीषण का मन रावण द्वारा प्रदत्त भौतिक सुख-सुविधाओं की आसक्ति में अटका रहता है। अत: वह भगवान की शरण में जाने का साहस नहीं जुटा पाता। दूसरी बात वह यह भी सोचता है कि मैंने कोई बहुत भक्ति या सेवा तो की नहीं है, पता नहीं मैं जाऊँगा तो मुझे भगवान अपनायेंगे या नहीं। यही दोनों हमारे जीवन की भी दुविधा है। सुंदरकांड में हनुमान जी जब विभीषण से मिलते हैं तो बात ही बात में वे दोनों शंकाओं को निर्मूल कर अपना स्वयं का उदाहरण देकर उसके मन में उत्साह, साहस जाग्रत कर देते हैं। यही है हमारे प्रिय हनुमान जी की भूमिका।

हनुमान जी कहते हैं, “अरे! मेरे जैसे वानर को, जिसका नाम भी सुबह-सुबह ले लें तो दिन भर उसे खाना नहीं मिलता, उसे भी भगवान अपना सकते हैं तो आपको क्यों नहीं अपनायेंगे? आप तो बहुत श्रेष्ठ हैं।” इस प्रकार हनुमान जी ने उन्हें विश्वास दिलाया तब विभीषण राम जी की शरण में जाकर कहते हैं मैंने आपका बड़ा यश सुना है कि आप शरण में आये हुए व्यक्ति की रक्षा करते हैं, उसका दु:ख दूर करते हैं, मैं भी आपकी शरण में आ गया हूँ, मेरी रक्षा कीजिये। भगवान ने विभीषण को अपना लिया, तुरंत समुद्र का जल मंगवाकर उनका तिलक कर लंका का राजा घोषित कर दिया। लौकिक दृष्टि से वे राजा बने पर वास्तव में भगवान् ने उन्हें अपनी भक्ति प्रदान कर दी। विभीषण ने भगवान राम से कहा कि आपसे मिलने के पूर्व मेरे मन में कामनायें थीं, इच्छायें भी थीं, लेकिन आपके प्रेम का प्रवाह ऐसा बहा कि मेरे हृदय की सारी कामनायें, इच्छायें पूरी हो गईं।

हनुमान जी का स्मरण सुबह-सुबह भी कर सकते हैं

सुंदरकांड की यह चौपाई *"प्रात लेई जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा॥"* के कारण समाज में यह भ्रम फैल गया कि सुबह-सुबह हनुमान जी का नाम नहीं लेना चाहिये। यह धारण पूर्णत: गलत है। यह बात हनुमान जी के लिये नहीं है। वे तो भगवान के भक्त हो गये, वे तो रघुबर यानी रघुवंश के ही हो गये, उनका वह दोष ही दूर हो गया, यह बात तो वानर जाति के बारे में है। सवेरे-सवेरे वानर का स्मरण करोगे तो वानर का चंचल स्वभाव होता है, वैसी ही चंचलता हमारी बुद्धि में बनी रहेगी, हम दिन भर भाग-दौड़ करते रहेंगे, खाने का वक्त तक नहीं मिलेगा। यह मनोवैज्ञानिक सिद्धांत है, जैसा विचार करोगे उसी प्रकार की प्रवृत्ति हमारे अंदर उत्पन्न होती रहती है। हनुमान जी कहते हैं मैं अधम था फिर भी राम जी ने हमारे ऊपर कृपा की। भगवान की कृपा से हमारे हनुमान जी पूजनीय बन गये। वे सदैव, हर काल में हर वक्त पूजनीय हैं।

7. कठिन से कठिन कार्य सहजता से पूरे

(चौपाई 18 से 20)

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥18॥

हनुमान जी की कीर्ति–सूर्य को निगल लिया

देखो हनुमान जी की कीर्ति क्या बतायें। इनका जन्म हुआ और इन्होंने आकाश में सूरज को देखा। प्रात: का वह सूरज चमक रहा था, तो हनुमान जी ने उसे मधुर फल सेब आदि समझकर निगल लिया। जन्म होते ही ऐसी उड़ान भरी कि आकाश में सूरज के पास पहुँच गये और सूरज को निगल लिया। कुछ लोग कहेंगे क्या बात करते हो, जन्म होते ही कोई इतनी ऊँची उड़ान कैसे भरेगा। देखो, वे वायु पुत्र हैं, वायु को कहीं पर भी जाने में देर नहीं लगती, वायु ने अपना यह गुण हनुमान जी को दे दिया था।

छोटे बच्चे सदा ऊँची चीज चाहते हैं

दूसरा अर्थ यह भी हुआ कि जो छोटे-छोटे बच्चे होते हैं वे सदा ही ऊँची चीज चाहते रहते हैं। छोटा बच्चा 'डालर' या 'रूपया' क्या होता है नहीं पूछता 'मुझे



डालर चाहिए' ऐसा भी नहीं कहता। वह चन्द्रमा को चाहता रहता है। राम जी की लीला देखो या कृष्ण जी की, या और भी दूसरे सामान्य बच्चे हैं, वे सब भी चन्दा मामा को लेना चाहते हैं। उनको चन्द्रमा ही चाहिए, अर्थात् वे सदा ऊँची चीज ही चाहते रहते हैं।

हनुमान जी को इन्द्र ने वज्र से मारकर गिरा दिया

हनुमान जी जब सूरज के पास पहुँच गये तो देवराज इन्द्र व दूसरे देवताओं को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने हनुमान जी को मारकर गिरा दिया। इसीलिये हनुमान जी का मुँह फूल गया। छोटे बच्चे भी सदा ऊँची ज्ञान की बात पूछते रहते हैं क्योंकि उनका मन शुद्ध होता है। जैसे वे पूछते हैं, भगवान क्या है? तो हम बच्चों से कह देते हैं, बड़े हो जाओगे तो अपने आप पता चल जायेगा। वास्तव में हमें उत्तर ज्ञात नहीं होता, हम अपने अज्ञान को छिपाते रहते हैं और उनसे कहते हैं, बस अब चुप बैठो। उनकी सारी उत्कृष्ट जिज्ञासा को हम दबा देते हैं। बच्चा बेचारा क्या करे, मुँह फुलाकर बैठ जाता है।

बच्चे जब ऊँची बात पूछें, तब हम उन्हें ऊँची दिशा दें, ऊँची बातों में ही लगा दें तो कितना अच्छा है। अभिप्राय यह हुआ कि बचपन से ही उनमें ऐसी अपार शक्ति थी, और जिज्ञासा थी, ज्ञान की पिपासा थी। *'बुद्धिमतां वरिष्ठः'* हनुमान जी सभी बुद्धिमानों में वरिष्ठ हैं, श्रेष्ठ हैं।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥19॥

हनुमान जी ने राम नाम के बल पर समुद्र पार किया

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं भगवान श्रीराम द्वारा दी गयी मुद्रिका, जिसमें राम नाम लिखा था को हनुमान जी ने मुख में रखा और विशाल समुद्र को सहज ही बिना आश्चर्य के पार कर गये। अंगुठी को मुँह में रखने का अर्थ है भगवान के नाम को उन्होंने मुख में रख लिया। भगवान के नाम का प्रताप ऐसा है कि हमें उसकी याद हो या न हो, यानी हम विश्वास करें या न करें, लेकिन उस नाम के बल पर सब काम होते रहते हैं।

सीता जी ने उनसे पूछा कि समुद्र कैसे पार किया, तो बोले राम नाम के सहारे। लौटते समय सीता जी की चूड़ामणि उनके पास थी। हनुमान जी बोले मैंने तो कुछ किया नहीं, जो बल था, भगवान का था। जाते समय अंगुठी ने काम किया, आते समय चूड़ामणि ने काम किया और इस तरह समुद्र को पार कर गये। गोस्वामी जी कहते हैं इसमें आश्चर्य कुछ नहीं (अचरज नाहीं)। आश्चर्य तो तब होता जब भगवान के भरोसे के बिना ही कोई यह कार्य कर दे।

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥20॥

हनुमान जी के चरणों को पकड़ें, कठिन से कठिन काम सरल हो जाता है

'अनुग्रह' शब्द बड़ा सुंदर, सारगर्भित है। 'ग्रह' शब्द का अर्थ होता है पकड़ना, और 'अनु' का अर्थ होता है बाद में। इस प्रकार अनुग्रह का अर्थ हुआ हमारे पकड़ने के बाद भगवान जो करते हैं। अर्थात् जब हम भगवान के चरणों को पकड़ लेते हैं तब उनका अनुग्रह होता है। गोस्वामी जी कहना यही चाहते हैं पहले आप हनुमान जी को, उनके चरणों को पकड़ लें, उनकी भक्ति करें तो अवश्य ही उनका अनुग्रह प्राप्त हो जायेगा और उनके अनुग्रह से दुर्गम काज भी सुगम हो जायेगा।



8. आपकी कृपा से राम दरबार में प्रवेश

(चौपाई 21)

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥21॥

हनुमान जी की कृपा से रामदर्शन आसान

"पैसार" शब्द लोकभाषा का है, इसका अर्थ होता है, प्रवेश। गोस्वामी जी कहते हैं राम जी के द्वार पर हनुमान जी रखवाले हैं और हनुमान जी की आज्ञा के बिना राम जी के दरबार में प्रवेश नहीं मिलता। तात्पर्य है हनुमान जी की भक्ति मिल जाये, हनुमान जी की कृपा हो जाये, तो भगवान के दर्शन जो अत्यंत कठिन हैं, बड़ी आसानी से प्राप्त हो जाते हैं। ये ऐसे रखवाले नहीं हैं जो अन्दर जाने ही न दें। वे तो ऐसे हैं जो पकड़-पकड़ कर प्रभु से मिलाते रहते हैं। चलो भगवान के पास। तुलसीदास जी को राम जी का दर्शन हनुमान जी ने ही कराया।

तुलसीदास जी जब कथा सुनाते थे तो एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में हनुमान जी चुपचाप आकर वहाँ बैठ जाते थे। जब उनको पता चला कि एक बूढ़ा व्यक्ति सबसे बाद में जाता है तो गोस्वामी जी ने उनके पांव पकड़ लिये। तब



फिर हनुमान जी ने उनको राम दर्शन कराया। देखो, राम दर्शन बड़ा कठिन काम है, लेकिन हनुमान जी का अनुग्रह हुआ तो वह कितना सरल हो गया।

9. दैनिक जीवन में हनुमान जी सहायक

(चौपाई 22 से 26)

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डरना ॥22॥

हनुमान जी की शरण से सुख की प्राप्ति, डर गायब

आगे कहते हैं, आपकी शरण में आने से सब सुखों की प्राप्ति हो जाती है। लौकिक सुख जैसे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक या पारिवारिक की

भी प्राप्ति हनुमान जी के शरण में जाने से होती है। इसी प्रकार पारलौकिक एवं आध्यात्मिक सुख की भी प्राप्ति आपकी शरण से होती है। आप जैसे रक्षक हमें प्राप्त हैं तो हमें किसका डर हो सकता है? हमें किसी से डरने की आवश्यकता नहीं है। हमारे प्रिय हनुमान जी हमारे साथ हैं, अब डर किस बात का?

आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥23॥

आपका तेज हमसे संभलने वाला नहीं, आप स्वयं संभालें

हनुमान जी, आपका जो तेज है उसे संभालने में आप ही समर्थ हैं। वह हमसे संभलने वाला नहीं है। इसका दूसरा अर्थ भी है जिसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। यदि भगवान का कोई काम हमारे पास आये तो ऐसा नहीं समझना चाहिये कि हम उनका काम कर देंगे। भगवान से कहें कि भगवान यह आपका काम है। अत: आपके प्रताप से ही पूर्ण हो सकता है। आप ही इसको संभाल सकते हैं। इसलिये आप ही हमें वह तेज, बल आदि सब दीजिये, यदि इस कार्य को हमसे ही करवाना हो, तो। नहीं तो फिर आप अपना तेज स्वयं ही संभालिये। अपना काम आप ही कीजिये।

हनुमान जी की गर्जना से तीनों लोकों में कंपन

हनुमान जी जब गर्जना करते हैं तो तीनों लोक थर-थर काँपने लग जाते हैं। देखिये, लंका में हनुमान जी ने एक बार धूम मचा दी, दुबारा जब अंगद गये तो सभी निशाचर उनको देखकर घबराने लगे। अरे! वह वानर फिर से आ गया है। पहचान नहीं पाये कि यह दूसरा है। सब अनायास ही अंगद को रास्ता दिखाने लगे और उन्हें रावण के दरबार में ले गये। हनुमान जी का नाम ऐसा प्रभावी है।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥24॥

हनुमान जी का नाम लेने से भूत प्रेत पास नहीं आते

जब हम महाबीर हनुमान जी का नाम लेंगे, तब कोई भी भूत-प्रेत हमारे पास नहीं भटकेंगे। भूत-प्रेत भी एक प्रकार की योनि होती है। जो शरीर



छोड़कर चले तो गये, लेकिन अभी दूसरी देह में प्रविष्ट नहीं हुए, बीच में ही कहीं रह गये, ऐसी योनि भी होती है। सब के सब भूत खराब नहीं होते, कोई अच्छे भी होते हैं। भूत-प्रेतों की भी मुक्ति होती है, मुक्ति का सबसे अच्छा साधन है भागवत श्रवण। हनुमान चालीसा का पाठ करने से ये भूत पिशाच हमारे पास नहीं आते। कभी कहीं डर लगे तो पाठ कर लेना चाहिए। बस महाबीर हनुमान जी का नाम गाते, सुनाते रहो, सब अमंगल दूर होंगे। जो भगवान का नाम लेता रहता है उसका कभी कोई अमंगल नहीं होता है।

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥25॥

हनुमान जी के निरंतर जप से रोग व कष्ट दूर होते हैं

यदि वीर हनुमान जी का निरंतर जप करें, स्मरण करें तो उनकी कृपा से बड़े-बड़े रोग दूर हो जाते हैं। सारी पीड़ा दूर हो जाती है। शरीर के रोग, मन के रोग जैसे काम, क्रोध आदि, बुद्धि के रोग जैसे अज्ञान, संशय, भ्रम इत्यादि, ये सब दूर हो जाते हैं।

संकट ते हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥26॥

हनुमान जी के ध्यान से संकट दूर

हनुमान जी हमें संकट से छुड़ा देते हैं, कब? जब कोई भी उनका मन, कर्म, वचन से ध्यान करता है तब। यानी उनके प्रति भावना हो, वचन हो एवं कर्म भी हो। कोई-कोई सिर्फ कहते रहते हैं कि कोई काम हो तो हमसे कहना और यदि उनको कोई काम दे दिया जाये तो उनको लगता है, अरे मैंने तो सिर्फ कहा था, उसका अर्थ यह थोड़े ही है कि काम कहने ही लग जाओ मायने जब कोई किसी से कहता है काम बताना, तो यह वचन से हुआ, कर्म से नहीं हुआ। काम बताने के बाद यदि कर दिया परंतु मन से यही चाहते रहे, यह कहाँ से आ गया, दुबारा न आये तो वह वचन व कर्म से तो हुआ पर मन से नहीं हुआ। तो मन, वचन, कर्म से कोई हनुमान जी का कार्य करे, उनका ध्यान करे तो फिर क्या है, हनुमान जी उसको संकटों से छुड़ा देते हैं।

10. राम जी एवं सबका कार्य करने वाले

(चौपाई 27 से 30)

सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥27॥

राम जी सबसे परे हैं

संसार में यदि श्रेष्ठता का तारतम्य देखा जाए तो यह मनुष्य सबसे श्रेष्ठ है। अब कोई कहे कि क्या उससे भी श्रेष्ठ कोई है? हाँ है, सबके ऊपर शासन करने वाले श्री रामचन्द्र जी। भले ही वे तपस्वी (तपस्वी राजा) वेश में हों लेकिन सबके राजा जो तो वे हैं हीं। वे सबके परे हैं, उनके परे दूसरा कोई नहीं है। नारद जी ने भी भगवान को श्राप देते हुए कहा था, "परम स्वतंत्र न सिर पर कोई," आप परम स्वतंत्र हैं, आपके सिर पर कोई है ही नहीं, इसलिये आपके मन में जो आता है, वही करते रहते हैं।

रामजी सबसे परे हैं, वेदांतिक अर्थ

इस बात को यदि हम वेदान्त की दृष्टि से देखें तो और भी गंभीर अर्थ निकल आता है। किसके परे क्या है इसका क्रम कठोपनिषद् में बड़ी सुंदर रीति से बताया गया है। इन्द्रियों के परे इन्द्रियों के विषय हैं। इन्द्रियाँ हैं – कान, नाक, जीभ, त्वचा, आँख। विषय हैं– शब्द, सुगंध, स्वाद, स्पर्श, दृश्य। कान से सुनने की क्षमता सीमित है परंतु शब्द बहुत हैं, बहुत विस्तृत हैं। अत: कान से परे शब्द हैं। स्वाद के विषय बहुत सारे हैं परंतु जीभ छोटी सी है। इस प्रकार इन्द्रियों से परे विषय हैं। विषयों के परे है मन – यह मन ऐसे ऐसे विषयों की कल्पना कर सकता है कि पूछो मत। संसार के जितने विषय हैं उनसे ज्यादा मन कल्पना कर सकता है, अत: विषयों के ऊपर मन है। मन से परे बुद्धि है – बुद्धि मन से श्रेष्ठ है तो कहा मन से परे बुद्धि। व्यक्तिगत बुद्धि से परे समष्टि बुद्धि है जिसे ईश्वर की बुद्धि कह सकते हैं। जीव की बुद्धि से परे ईश्वर की बुद्धि महान् आत्मा है। उस महान् आत्मा के परे अव्यक्त प्रकृति है। अव्यक्त प्रकृति से परे पुरुष है। किसी ने पूछा कि उसके परे क्या है? भगवान से परे उनके अलावा दूसरी कोई चीज नहीं है। वे स्वयं ही अनंत व्यापक स्वरूप हैं। जब कहा जाता है कि राम जी सबके परे हैं, तो इसे समझने के लिए यह सारा क्रम जान लेना चाहिए। उन सबके परे श्रीरामचन्द्र जी हैं।

सबके परे राम जी के कामों को हनुमान जी ने संभाला

आश्चर्य की बात है, श्रीराम जी जो सबके परे हैं, उनके भी सारे कामों को हनुमान जी ने संभाल लिया। समुद्र पार कर लिया, सीता जी की खोज कर ली, सीता जी को संदेश दे दिया और उनका संदेश लेकर भी आ गये। न जाने

कितने काम किये हैं। लक्ष्मण जी के प्राण संकट में पड़ गये तो उनको बचा लिया, भरत जी भी निराश हो गये थे कि चौदह साल हो गये, अभी राम जी नहीं आये। वे मरने ही जा रहे थे, तब हनुमान जी वहाँ पहुँच गये और उन्हें भगवान का संदेश देकर मरने से बचाया। इस प्रकार सबसे परे प्रभु श्रीराम जी के कार्यों को संभालने वाले प्रिय हनुमान जी हैं।

और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥28॥

हनुमान जी हमारे भी मनोरथों को पूरा करते हैं

भगवान राम जी तो सबसे बड़े हैं, सबसे परे हैं। जब आप उनके काम कर सकते हैं, तो औरों के क्यों नहीं कर सकते। यानी जिसका जो मनोरथ हो, इच्छा हो, हनुमान जी उसे पूर्ण करते हैं। 'मनोरथ' बड़ा अच्छा शब्द है। 'रथ' माने चैरियट। हमारे मन का रथ दौड़ता ही रहता है, यहाँ वहाँ जाता रहता है। यह चाहिये, वह चाहिये, करता रहता है। गोस्वामी जी कहते हैं हनुमान जी हमारे मनोरथों को पूर्ण कर देते हैं। इतना ही नहीं उनकी कृपा से हमें अनंत जीवन, असीम जीवन की प्राप्ति हो जाती है। जीवन का सबसे बड़ा फल प्राप्त हो जाता है।

चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥29॥

कलियुग में भी हनुमान जी का प्रताप है

सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग इन चारों युगों में हनुमान जी का प्रताप रहता है। उनका प्रताप किसी युग में प्रकट होता है, किसी युग में अप्रकट या थोड़ा सा ही प्रकट होता है। त्रेतायुग में, राम जी के समय में जो हनुमान जी का अवतार हुआ था वह तो सुप्रसिद्ध है। लेकिन यह सृष्टि कल्प से कल्पान्तर तक चलती रहती है। माने, राम अवतार में उनका प्रताप जितना प्रकट होता है, उतना अन्य युगों में नहीं होता। परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि अन्य युगों में उनका प्रताप है ही नहीं। कलियुग में भी हनुमान जी का प्रताप है। चूंकि वायु देवता तो कलियुग में भी हैं, अतः वायुपुत्र हनुमान जी की महत्ता कलियुग में

भी है। इसी प्रकार वायु चारों युगों में रहती है। अत: वायुपुत्र हनुमान का प्रताप चारों युगों में रहता है।

साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥30॥

सज्जनों की रक्षा, दुष्टों को मारना एवं राम जी को प्रिय

हनुमान जी साधु संतों की रक्षा करने वाले हैं एवं असुरों का निकंदन करने वाले हैं। ऐसा कहा जाता है हनुमान जी बड़े बलवान हैं। देखो, कोई कोई बलवान ऐसे होते हैं कि बेचारे निर्बलों को सताते रहते हैं। कोई कोई तो सीधे-सादे लोगों को डराते रहते हैं, धमकाते रहते हैं और स्वयं दुष्ट लोगों को साथ ले लेते हैं। हनुमान जी ऐसे नहीं हैं। जहाँ देखा असुर आये हैं तो उनको ऐसी मार मारते हैं कि उनके प्राण ही ले लेते हैं। राम दुलारे – राम जी को तो अत्यंत ही प्रिय हैं।

11. सभी सिद्धियों एवं राम रसायन के स्वामी

(चौपाई 31से 34)

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥31॥

सीता जी का वरदान – हनुमान जी आठों सिद्धियों, नौ निधियों को देने वाले

सारे देवताओं ने हनुमान जी को अष्ट सिद्धियाँ व नौ निधियाँ दे रखी थीं परंतु जानकी माता ने हनुमान जी को ऐसा वर दे दिया कि ये सिद्धियाँ तो तुम्हारे पास सदा रहें ही, तुम इन सिद्धियों के देनेवाले भी बन जाओ। अष्ट सिद्धियाँ योग शास्त्र में बतायी गयी हैं। ये हैं अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व एवं वशित्व। नौ निधियाँ हैं महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुन्द, नील और खर्व। ये नौ निधियाँ कुबेर जी की ही हैं। इसी प्रकार नौ रत्न होते हैं मुक्ता (मोती), माणिक्य (मणि), वैदूर्य (लहसुनिया), गोमेद, वज्र (हीरा), विद्रुम (मूंगा), पद्मराग, मरकत (पन्ना) एवं नीलम। हनुमान जी ये सब भी दे सकते हैं, कुबेर की संपत्ति भी दे सकते हैं।



अष्ट सिद्धियाँ क्या हैं?

हनुमान जी में जो आठों प्रकार की सिद्धियाँ हैं, उनका वर्णन श्रीरामचरितमानस में एवं हनुमान चालीसा में जगह-जगह आता है। इन पर विचार करते हैं।

1. अणिमा – इसका अर्थ होता है बिल्कुल सूक्ष्म हो जाना, छोटा सा हो जाना, छोटी से छोटी चीज में व्याप्त हो जाना। 'सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।' 'मसक समान रूप कपि धरी।'
2. महिमा – इसका अर्थ है विशाल रूप धारण कर लेना। 'जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा।।' समुद्र लांघते समय सुरसा

उनको निगलना चाहती थी। वह अपने मुख को जितना खोलती जाती थी उससे दुगुना-दुगुना हनुमान जी होते चले गये। हम सिर्फ फोटो को ही बड़ा-छोटा कर सकते हैं, परंतु हनुमान जी चाहें तो छोटे बन सकते थे चाहे तो बड़े।

3. गरिमा – मायने भारीपन। महाभारत के समय हनुमान जी ने अपनी पूंछ को इतना भारी बना लिया था कि भीमसेन भी उसको उठा नहीं पाये थे। उनकी पूंछ अत्यधिक भारी हो गयी थी।
4. लघिमा – इसका मायने इतना हल्का हो जाना मानो कोई पंख हो। हनुमान जी ने जब लंका जलाई तो गोस्वामी जी इसका वर्णन कैसे करते हैं? 'देह बिसाल परम हरू आई। मंदिर ते मंदिर चढ़ धाई' इनकी देह तो विशाल है परंतु हैं बहुत हल्के। अत: एक घर से दूसरे घर में कूदकर आसानी से चले जाते हैं। यहाँ पर दो सिद्धियाँ एक साथ हैं 'महिमा' विशाल शरीर, 'लघिमा' एकदम हल्का शरीर।
5. प्राप्ति – अर्थात् इच्छित वस्तु को प्राप्त कर लेने की शक्ति। 'प्राप्ति' का यहाँ तात्पर्य है बैठे-बैठे ही लोक लोकान्तरों का दर्शन कर पाना, भूत, वर्तमान, भविष्य सब कुछ देख पाना।
6. प्रकाम्य – जैसा बनना चाहें वैसा बन सकने की शक्ति। जैसा चाहें वैसा रूप धारण कर लेना, कभी ब्राह्मण का रूप धारण कर लिये कभी अन्य। चाहे जिस रूप में आ गये।
7. ईशित्व – इसका अर्थ है शासन करना।
8. वशित्व – इसका अर्थ है सबको वश में कर लेना।

योग शास्त्र में इनका वर्णन है, ये सब भगवान की कृपा से संपादित की जा सकती हैं। प्राणायाम, मंत्र, तप इत्यादि के द्वारा ये सिद्धियाँ पाई जा सकती हैं। ये सब सिद्धियाँ हनुमान जी में देवताओं के आशीर्वाद से थीं ही, सीता जी के वरदान से हनुमान जी इन सिद्धियों को देने में भी समर्थ हो गये।

आध्यात्मिक दृष्टि से नौ निधि – नौ प्रकार की भक्ति

"नौ निधि" का आध्यात्मिक अर्थ भी हो सकता है। इस दृष्टि से नौ निधि का अर्थ होता है नौ प्रकार की भक्ति। भागवत में प्रह्लाद जी ने नौ प्रकार की भक्ति कही है। ये इस प्रकार है –

1. श्रवणम्– भगवान की कथा श्रवण करना।
2. कीर्तनम्– भगवान की कथा का, गुणों का कीर्तन करना।
3. स्मरणम्– भगवान के नाम का स्मरण करना।
4. अर्चनम्– उनके विग्रह की पूजा करना।
5. वन्दनम्– नमस्कार करना।
6. दास्यम्– सेवा भाव, दास्य भाव से सेवा करना।
7. सख्यम्– मित्रता का भाव रखना।
8. आत्म निवेदनम्
9. पूर्ण शरणागति– अपने आपको भगवान के प्रति अर्पित करना।

इस प्रकार लौकिक नौ निधि भी हैं, आध्यात्मिक नौ निधि भी हैं। हनुमान जी ये सब दे सकते हैं।

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥32॥

राम रस हनुमान जी के पास

राम रस जो होता है वह हनुमान जी के पास है। गोस्वामी जी कहते हैं, "आप तो सदा ही रघुपति के दास हैं। हम भी यही कामना करते हैं कि हम भी हमेशा के लिए भगवान श्रीराम के दास बन जायें।"

तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥33॥

आपके भजन से राम जी की प्राप्ति

यहाँ पर जो 'पावै' शब्द है इसके दो तरह के पाठ हैं। एक तो पावै है अर्थात् आपके भजन से राम जी की प्राप्ति हो जायेगी। दूसरा पाठ है 'भावै' जिसका आशय है यदि हनुमान जी का भजन करेंगे तो राम जी को अच्छा लगता है। और यदि आपके भजन करने से राम जी की प्राप्ति हो जाये तो फिर क्या कहना, राम जी की प्राप्ति से जन्म-जन्म के दुःख दूर हो जाते हैं।



अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि भक्त-कहाई ॥34॥

देह त्याग के समय जीव भगवान के धाम जाता है

अन्तकाल में जब देह त्याग होता है तब वह जीव भगवान के धाम, साकेतधाम में चला जाता है। और वहाँ तो जन्म से ही हरि-भक्त हो जाता है। ऐसे कैसे? इसलिये कि वहाँ ऐसे ही भक्त लोग पहुँच पाते हैं।

12. बस हनुमान जी की भक्ति से सब प्राप्त

(चौपाई 35, 36)

और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥35॥

एक ही देवता की भक्ति मन लगाकर करें

"और देवता चित्त न धरई" का तात्पर्य यह है कि अपने मन में दूसरे देवताओं का कभी ध्यान मत करो। बस हनुमान जी में ही मन लगाओ। एक बार जिसकी भक्ति करें उसके प्रति विश्वास रखें। आज एक में विश्वास किया, कल दूसरे में हो गया ऐसा नहीं। अपने मन को एकाग्र करें। जैसे यदि हनुमान जी की भक्ति कर रहे हो, तो दो दिन किया फिर सोचने लगे, भाई हनुमान जी काम नहीं कर रहे हैं, गणेश जी की भक्ति कर लेते हैं। तो दूसरे के पास चले गये। ऐसा मत करो। बस भक्ति करो। उनके प्रसाद से आपको सब कुछ मिल जायेगा।

यह अर्थ नहीं कि दूसरे देवता का ध्यान मत करो

और दूसरी बात "और देवता चित्त न धरई" का अर्थ यह नहीं कि दूसरे देवता का ध्यान मत करो। अर्थ यह है कि दूसरे देवताओं को इतना ज्यादा मन में

मत रखो। यहाँ दूसरे देवता का तात्पर्य है इन्द्र, वरुण, अग्नि, वायु, कुबेर, दिग्पाल आदि। इन सबमें थोड़ी-थोड़ी शक्तियाँ हैं। उनसे कुछ चाहने पर वे हमारे कितना ध्यान रखेंगे भरोसा नहीं, लेकिन हनुमान जी के साथ ऐसा नहीं है। एक हनुमान जी की सेवा से ही सारे काम निपट सकते हैं। इनको सभी देवताओं का बचपन से ही आशीर्वाद प्राप्त है। सब देवताओं ने अपना बल, अपनी शक्तियाँ हनुमान जी को दे रखी हैं।

संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥36॥

संकट व कष्टों से छुटकारा

ऐसे बलवान् व वीर हनुमान जी के स्मरण से हमारा संकट कट जायेगा और सारी पीड़ा, दु:ख, कष्ट जो हैं सब समाप्त हो जायेंगे।

13. गुरु की तरह कृपा की प्रार्थना

(चौपाई 37)
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहुँ गुरुदेव की नाईं ॥37॥

हनुमान जी की सारी इन्द्रियाँ वश में अतः गोस्वामी

गोस्वामी तुलसीदास जी जब 'गोसाईं' कहते हैं, तो उसका अर्थ है गोस्वामी। 'गो' का अर्थ है इन्द्रियाँ, 'स्वामी' का अर्थ है मालिक, वश में रखने वाला। अत: गोस्वामी का आशय जिसने अपनी सारी इन्द्रियों को वश में कर रखा हो। देखो, यह बात बड़े महत्व की है। जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को वश में रख सकता है वही हनुमान बन सकता है। चाहे जो समस्या हो, जैसी भी परिस्थिति हो, उसका सामना करने की शक्ति उसमें आ जाती है। इसके विपरीत जो इन्द्रियों के बस में रहता है वह ढीला-ढाला रहता है उसमें कोई ताकत नहीं होती। इस प्रकार इन्द्रियों के स्वामी हनुमान जी की जय हो, जय हो, जय हो।

गुरु की तरह हनुमान जी कृपा करें

अब कहते हैं कि गुरुदेव के समान आप हमारे ऊपर कृपा कीजिये। गुरु ऐसे होते हैं कि भगवान भी यदि नाराज हो जायें तो गुरु बचा लेंगे। गुरु का स्वभाव ऐसा होता है कि गुरु नाराज होते ही नहीं। यही उनकी विशेषता है। इसलिये उन्हें कारुण्यसिंधु, करुणा सागर, कृपासागर आदि कहते हैं। तो यहाँ कहा गुरुदेव जैसी कृपा करते हैं, आप भी हम पर वैसी ही कृपा कीजिये।

हनुमान जी शंकर जी के अवतार, शंकर जी गुरु हैं ही

वैसे भी हनुमान जी शंकर भगवान के अवतार हैं और शंकर भगवान गुरु रूप तो हैं ही। रामचरितमानस के प्रारंभ में ही शंकर जी की प्रार्थना करते हुए कहा गया है, “वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।” गोस्वामी जी गुरु को नमस्कार करते हुए कहते हैं, ये गुरु कौन हैं? तो कहा शंकर भगवान हैं। भगवान ही गुरु रूप में आये हैं। तो यहाँ कहा है, हनुमान जी, आप गुरुदेव के समान हमारे ऊपर कृपा कीजिये।

14. हनुमान चालीसा की महिमा

(चौपाई 38, 39)

जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहिं बंदि महा सुख होई ॥38॥

सौ बार पाठ करने से बंधनों से मुक्ति

यदि कोई बंधन में पड़ा हो, जैसे लौकिक दृष्टि से कोई जेल में हो, वह यदि वहाँ पर हनुमान जी का ध्यान करे तो उस बंधन से मुक्त हो जाता है। लेकिन इसका वास्तविक अर्थ है, समस्त सांसारिक बंधनों से हमारी मुक्ति हो जाती है।

यदि कोई इस हनुमान चालीसा को सौ बार पढ़ने का संकल्प करता है तो इसका यह अर्थ नहीं कि एक बार आसन में बैठे तो सौ बार पाठ करके ही उठे। भगवान से आप कहो कि हम इतने दिन में 100 बार पढ़ेंगे। लेकिन क्या है? भगवान से कहना पड़ता है कि मैं इतने दिनों में 100 बार पाठ करूँगा या एक ही दिन में करना हो तो यह संकल्प लें कि सुबह इतने घण्टे, दोपहर में



इतने घण्टे, शाम व रात्रि को इतने घण्टे पाठ करके एक ही दिन में 100 बार पूरा करूँगा।

अब देखो, एक बार हनुमान चालीसा पढ़ने में कम से कम 5 मिनट तो लगते ही हैं। इस तरह 100 बार पाठ करें तो 500 मिनट तो लगेंगे। अब 500 मिनट के लगभग 8.25 घण्टे हुए। इस प्रकार एक दिन में 2 घण्टे की चार बार बैठकें करके 100 बार हनुमान चालीसा का पाठ पूरा कर सकते हैं।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्ध साखी गौरीसा ॥39॥

हनुमान चालीसा के पाठ से सिद्धियाँ प्राप्त

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं यदि कोई मनसा, वाचा, कर्मणा, पूरे मनोयोग से इस चालीसा को सौ बार पढ़े तो फिर उसे सब सिद्धियाँ प्राप्त हो जायेंगी। माने, एक तो आपके मन की कामना की सिद्धि, और दूसरा अष्ट सिद्धियाँ भी प्राप्त हो सकती हैं। जो सबसे बड़ी सिद्धि प्राप्त हो सकती है वह अपने शुद्ध स्वरूप का, सच्चिदानन्द स्वरूप का ज्ञान होकर उसमें दृढ़ स्थिति

हो जाना। अन्य सब सिद्धियाँ तो स्वप्न तुल्य हैं आयीं और गयीं। ये सब तो दिखने भर की है। उनसे अपना कोई ठोस प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

प्रमाण क्या है? शंकर जी साक्षी हैं

कोई कहेगा महाराज इसका प्रमाण क्या है कि ये सारी सिद्धियाँ प्राप्त हो जायेंगी। बोले, 'साखी गौरीसा' गौरीसा – गौरी (पार्वती) जी के पति भगवान शंकर साक्षी हैं। संस्कृत के 'साक्षी' को लोक भाषा में 'साखी' कहा जाता है। तो भगवान शिव इसके प्रमाण हैं। जिसको विश्वास न हो वह जाकर शंकर जी से पूछ लें।

15. हृदय में वास की प्रार्थना

(चौपाई 40)

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥40॥

मैं आपका शिष्य – मेरे हृदय में निवास करिये

तुलसीदास जी कहते हैं, मैं तो आपका सेवक हूँ। 'चेरा' का मतलब सेवक भी होता है, शिष्य भी होता है। तो हे हनुमान जी, मैं आपका शिष्य हूँ, आपका सेवक हूँ, आप मेरे हृदय में डेरा डाल दीजिये, कैम्प कीजिये, दिल में बस जाइये। आप अपना तम्बू, कैम्प हमारे हृदय में ही गाड़ दीजिये और वहीं बस जाइये, मेरे मन में, दिल में बस जाइये। अन्त में 40 चौपाइयों के बाद एक दोहा कहते हैं –

16. राम, लखन, सीता सहित हृदय में वास की प्रार्थना

(दोहा 3)

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

हनुमान जी मूर्तिमान मंगल हैं

पवनतनय – पवन पुत्र (इसका वर्णन पहले हो चुका है) हे हनुमान जी आप पवन पुत्र हैं, आप संकट का हरण करने वाले हैं। 'मंगल मूरति रूप', आप तो



मूर्तिमान मंगल ही हैं। आपका नाम मंगल है, आपके गुण मंगल हैं और लीला भी मंगल है। आप तो मंगल धाम ही हैं।

हनुमान जी आप, राम, लक्ष्मण व सीता सहित हृदय में वास करें

सुरभूप– भूप मतलब राजा, अर्थात् आप देवताओं में श्रेष्ठ हैं। हे देवताओं में श्रेष्ठ हनुमान जी आप, राम, लक्ष्मण, सीता जी सहित मेरे हृदय में वास करें। गोस्वामी तुलसीदास जी कहना चाहते हैं, राम, लक्ष्मण, सीता के साथ-साथ हम हनुमान जी को भी अपने हृदय मंदिर में बसायें। तो अपने हृदय में 'राम' माने ज्ञान को बसा लीजिये, 'सीता' माने भक्ति को बसा

लीजिये, 'लक्ष्मण जी' माने वैराग्य को बसा लीजिये। और सबकी सेवा में रत जो हनुमान जी हैं उनको यानी सेवा भाव को भी हृदय में बसा लीजिये। जीवन में ज्ञान, भक्ति, वैराग्य और सेवा आ जाये तो फिर क्या कहना, फिर तो बस आनंद मंगल है।

सियावर रामचन्द्र शंकर हरिः ॐ
पवनसुत हनुमान की जय।





अवलोकितेश्वर (सुबोध अग्रवाल) का जन्म मध्यप्रदेश के सतना जिले में 1962 में हुआ। उन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती से जुलाई 1983 में मंत्र दीक्षा ग्रहण की। अपने शैक्षिक जीवन को 1988 में समाप्त कर मुंगेर आश्रम में ढाई वर्ष तक गुरु सेवा में रत रहे, और गुरुदेव ने उनको अवलोकितेश्वर नाम भी प्रदान किया। वे अभी मध्यप्रदेश के सतना जिले में चार्टर्ड एकाण्टेण्ट का कार्य कर रहे हैं।

श्री गुरुदेव की प्रेरणा से भारत की अनुपम संस्कृति के प्रचार व उत्थान हेतु प्रवचनों को संग्रहित कर शीर्षकों के माध्यम से लेखन व संपादन का मंगलकारी एवं उत्तम कार्य शुरू किया। प्रथम ग्रंथ श्री हनुमान चालीसा है जिसमें चिन्मय मिशन के प्रमुख स्वामी तेजोमयानन्दजी के प्रवचनों का संग्रह है। दूसरा ग्रंथ गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड पर चिन्मय मिशन के वरिष्ठ स्वामी श्री शंकरानंदजी के प्रवचनों का संग्रह है।



'परमहंस स्वामी सत्यानन्दजी कहते हैं कि मैं तो सौ बार हनुमान चालीसा का पाठ कर प्रार्थना करता हूँ कि कोई निर्दोष जेल में बंद हो तो छूट जाए, और वह छूट भी जाता है। यदि हमारे मन में सेवा-भाव आए तो कभी-कभी दूसरों के लिए भी पाठ कर सकते हैं।'

श्री गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित श्री हनुमान चालीसा इतनी सरल एवं लोकप्रिय है कि प्राय: लोग इसके शब्दों में निहित भावों व महिमा को बिना समझे पाठ करते हैं। इस पुस्तक में पाठकों की सुगमता के लिए सम्पूर्ण पाठ को 16 शीर्षकों में वर्गीकृत कर विस्तृत रूप से समझाया गया है। दैनिक जीवन में इसकी उपयोगिता, पाठ करने की सरल विधि आदि का वर्णन है।

सभी भक्तों से विनम्र आग्रह है कि इस पुस्तक में वर्णित सभी शीर्षकों को पढ़ एवं समझकर फिर उसी अनुरूप श्री हनुमान चालीसा का पाठ करें। श्री सद्गुरु की कृपा से श्री हनुमान जी का अनुग्रह शीघ्र प्राप्त होगा।

